भागन हम पाये, सतगुरु की बलि जाई ।
७ राम को सेवक, मिल्यो निसान बजाई ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

रे रामराय चरना,
जेहि सुमिरे छुटि आवा गवना ॥टेक॥
बाँधि पचीसो बाँधहु,
तीन देव वसि करु अपना ॥१॥
क्रोध के मसल मेटावहु,
दुविधा दुमति दूरि करना ॥२॥
मन राजहिं वसि करि समुझावहु,
माया मोह पकरि धरना ॥३॥
सहज समाधि हृदय महँ लावहु,
ज्ञान ध्यान सुचि* दृढ़ करना ॥४॥
सत्त सरूप सदा भरि निरखहु,
लपटि रहो गुरु के चरना ॥५॥
कहे गुलाल सुनो भाई संतो,
बहुरि न होय जरा मरना ॥६॥

॥ शब्द २३ ॥

राम राम राम राम जेकरे जिय आवै ।
प्रेम पूर्न दृढ़ विराग सोई यह पावै ॥१॥
सतगुरु जब दियो प्रसाद प्रीत हूं लगावै ।
तन मन न्योछावरि वारि चरन मैं समावै ॥२॥

* निर्मल ।

गुलाल साहब की बानी

जीवन-चरित्र सहित

जिस मे

उन महात्मा के अति मनोहर और भक्ति बढाने वाले पद और साखियाँ शोध कर मुख्य मुख्य अंगों मे रक्खी गई हैं

और गूढ शब्दों के अर्थ व संकेत भी नोट मे लिख दिये गये हैं।

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई

सन् १९१०

1115

२५४ सफहा] [दाम ।।-)

Printed at the Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

निवेदन

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हम ने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हम ने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुकाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप वृत्तांत और कौतुक फुट नोट में लिख दिये जाते हैं।

सूचीपत्र

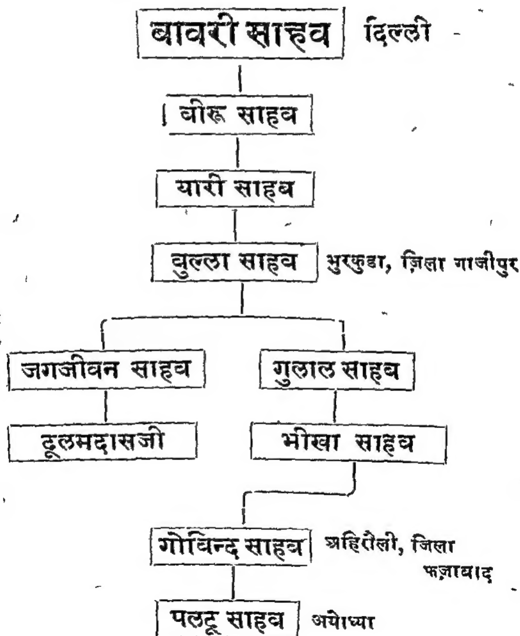
जीवन-चरित्र (१-२)

अ

*यह पद पृष्ट ४ में दिया है यहा कुछ बदली हुई टेक के कारन भूल से फिर छप गया।

शब्द	पृष्ठ

गुरू धारन किया। गुलाल साहब तअल्लुका बसहरि ज़िला गाजीपुर के जिमीदार थे और वहीं पैदा हुए और गृहस्थ आश्रम मे रह कर वहीं चोला छोड़ा। इसी तअल्लुके के एक गाँव का नाम भुरकुडा है जहाँ गुलाल साहब सतसग करते व कराते रहे। गुलाल साहब की साध गति थी और उनका तीव्र बैराग और प्रचड भक्ति उनकी अति कोमल और मधुर बानी से टपकती है॥



गुलाल साहब की बानी

उपदेश

॥ शब्द १ ॥

रे मन मूढ अज्ञानियाँ,
तोहि सुधियो न आय।
निस बासर भरमत फिरै,
दौड़त दिन जाय ॥१॥
प्रबल पाँच पायक* लिये,
बहु सेना† बनाय।
काया गढ बैठो कुतवलिया
हासिल‡ ले सब दाम गनाय ॥ २ ॥
किरषी§ करत बार बहु लागो,
हाथैं स्वाद कछू नहिं आय।
तृस्ना के गुन‖ धोखे तौलत,
भोंदू निर्मल जन्म गँवाय ॥ ३ ॥
डहकत¶ फिरत नेक नहिं मानत,
अपने हर दम हुकुम चलाय।
काहू सत के फंद परहुगे,
चिटुकी देत सो प्रगट नचाय ॥ ४ ॥
गुरु के सब्द तहाँ लै बाँधहु,
त्रासित** कबहुँ न छूटन पाय।
दास गुलाल दया सतगुरु के,
थाक्यो मन तब गइल बलाय ॥ ५ ॥

*प्यादे। †फौज। ‡आमदनी। §खेती। ‖गोन, बोरा जो बैल पर लादा जाता है। ¶ठगाना। **डरा हुआ।

॥ शब्द २ ॥

मन मैं निर्गुन गति जो आवै ।
हानि न होय जीव की कबहीं,
गगन मँडल घर छावै ॥ १ ॥
राजा रंक छत्र-पति भूपति,
।
नाना सुख तजि भयो है दिवाना,
पंडित वेद न भावै ॥ २ ॥
सन्यासी वैरागी तपसी,
तीरथ रटि रटि* धावै ।
आतम राम न जानहिं प्रानी,
तन कहँ त्रास दिखावै ॥ ३ ॥
संसय मेटि करै सतसंगति,
प्रेम पंथ पर धावै ।
सुन्न नगर मैं आसन माँडै,
जगमग जोति जगावै ॥ ४ ॥
आवागवन न होइ है कबहीं,
सतगुरु सत्त लखावै ।
कहैं गुलाल यह लगन हमारी,
विरला जन कोई पावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हरि नाम न लेहु गँवारा हो ।
काम क्रोध मैं रटत* फिरत हो, कबहु न आप सँभारा हो ।

*घूमना ।

आपु अपन कै सुधि नहिं जानहु, वहुत करत विस्तारा हो।
नेम धरम व्रत तीर्थ करतु हैा, चौरासी वहु धारा हो ॥२॥
तस्कर* चोर वसहिं घटभीतर, मूसहिं सहन† भंडारा हो।
सन्यासी वैरागी तपसी, मनुवाँ देत पछारा हो ॥ ३ ॥
धंधा धोख रहत लिपटाने, मोह रतो संसारा हो ।
कहैं गुलाल सतगुरु वलिहारी, जग तैं भयो नियारा हो॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

तुम जात न जान गँवारा हो ।
को तुम आहु कहाँ तें आयो, झूठो करत पसारा हो॥१
माटी कै बुंद पिंड कै रचना, ता मँ प्रान पियारा हो ।
लोभ लहरि में मोह को धारा, सिरजनहार विसारा हो ॥२॥
अपने नाह‡ को चीन्हत नाहीं, नेम धरम आचारा हो ।
सपनेहुं साहव सुधि नहिं जान्यौ, जम लुत देत पछारा हो॥३॥
उलट्यौ जीव ब्रह्म में मेल्यौ, पाँच पचीस धरि मारा हो।
कहैं गुलाल साधु मैं गनती, मनुवा भइल हमारा हो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

अवधू निर्मल ज्ञान विचारो ।
ब्रह्म सरूप अखंडित पूरन, चैाथे पद सोँ न्यारो ॥ १ ॥
ना वह उपजै ना वह विनसै, ना भरमै चैारासी ।
है सतगुरु सतपुरुष अकेला, अजर अमर अविनासी ॥२
ना वाके वाप नहीं वाके माता, वाके मोह न माया ।॥
ना वाके जोग भोग वाके नाहीं, ना कहु जाय न आया॥३॥
अद्भुत रूप अपार विराजै, सदा रहै भरपूरा ।
कहैं गुलाल सोई जन जानै, जाहि मिलै गुरु सूरा ॥ ४॥

*डाँकू । †आँगन । ‡पति ।

॥ शब्द ६ ॥

अवधू सो जोगी गुरु ज्ञानी ।
भजै राम जगत है न्यारा, ब्रह्म सरूप पिछानी ॥ १ ॥
काम को मारि क्रोध को जारै, धोखा दूरि बहावै ।
मन गजंद* ज्ञान करि साँकर, पकरि के जेर भरावै॥ २ ॥
सील सतोष कै आसन माँडै, सत्त सरूप विचारै ।
जीव ब्रह्म जब मेला होवे, आवागवन निवारै ॥ ३ ॥
अछय अमर अनुभव अनमूरत, कोई संत जन पावै ।
कहैं गुलाल सतगुरु बलिहारी, फिर यह लोक न आवै॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

मन तूँ हरि गुन काहे न गावै ।
तातें कोटिन जन्म गंवावै ॥ १ ॥
घर मे अमृत छोडि कै, फिरि फिरि मदिरा पावै ।
छोडहु कुमति मूढ अब मानहु, बहुरि न ऐसो दावै ॥२॥
पाँच पचीस नगर के बासी, तिनहिं लिये सँग धावै ।
बिन पर उडत रहै निसि बासर, ठौर ठिकान न आवै ॥३
जोगी जती तपी निर्बानी, कपि† ज्यौं बाँधि नचावै ।
सन्यासी बैरागी मौनी, धै धै नरक मिलावै ॥ ४ ॥
अब की बार दाव है मेरा, छोडौं न राम दोहाई ।
जन गुलाल अवधूत फकीरा, राखौं जंजीर भराई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मन मैं प्रीत करहु निज नाम ।
यह ससार अगम भवसागर, बहत है आठो जाम ॥ १ ॥
अपने घर की सुधि नहिं जानल, जल पत्थर परमान ।

*हाथी । †बंदर ।

इनकी ओट जनम जहँड़ावहु,* मनुवाँ फिरत हेवान॥२॥
पाँच पचीस से। प्रबल चोर हैं, तीन देव बेइमान।
कुल की कानि अंध नहिं सूझत, मुवले कहाँ समान॥३॥
अगम निगम जिन पंथ निहारो, पछिम उगायो भान।
कहैं गुलाल सतगुरु बलिहारी, निकलि गये। असमान॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

भजन करु मनुवाँ बैरागी ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद ममता त्यागो, प्रभु चरनन महं पागी १
सुत हित नारि बन्धु परिजन जन, डहत[†] हैं स्वारथ लागी २
झूठी सेव सेमर[‡] फल चाखो, अमृत फल काहे त्यागी ॥३
विष भोजनहि पाइ मत सोवहु, सत्त सब्द हिये जागी ४
जन गुलाल सतगुरु बलिहारी, मन मेलो मन लागी ॥५

॥ शब्द १० ॥

राम मोर पुँजिया राम मोर धना,
निस बासर लागल रहु मना ॥ टेक ॥
आठ पहर तहँ सुरति निहारी,
जस बालक पालै महतारी ॥ १ ॥
धन सुत लछमी रह्यो लोभाय,
गर्भ मूल सब चल्यो गंवाय ॥ २ ॥
बहुत जतन भेख रचो बनाय,
बिन हरि भजन इँदोरन[‡] पाय ॥ ३ ॥
हिंदू तुरुक सब गयल बहाय,
चौरासी मैं रहि लिपटाय ॥ ४ ॥

*ठगाना। †डाहते हैं। ‡एक फल का नाम है जो देखने मे सुंदर लाल रंग का होता है पर बहुत कड़ुवा।

कहै गुलाल सतगुरु बलिहारी,
जाति पाँति अब छुटल हमारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मूढ़हु रे निर्फल दिन जाय,
मानुष जन्म बहुरि नहिँ पाय ॥ १ ॥
कोइ कासी कोइ प्राग नहाय,
पाँच चोर घर लुटहिँ बनाय ॥ २ ॥
करि अस्नान राखहिँ मन आसा,
फिरि फिरि नरक कुंड मेँ बासा ॥ ३ ॥
खोजो आप चितै कै ज्ञाना,
सतगुरु सत्त बचन परवाना ॥ ४ ॥
समय गये पाछे पछितात्र,
कहैँ गुलाल जात है दाव ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

नगर हम खोजिलै चोर अबाटी* ।
निस बासर चहुँ ओर धाइलै, लुटत फिरत सब घाटी १
काजी मुलना पीर औलिया, सुर नर मुनि सब जाती ।
जोगी जती तपी सन्यासी, धरि मारयो बहु भाँती॥२॥
दुनिया नेम धर्म करि भूल्यो, गर्ब माया मद माती ।
देवहर पूजत समय सिरानो, कोऊ संग न जाती॥ ३ ॥
मानुष जन्म पाय कै खोइले, भ्रमत फिरै चौरासी ।
दास गुलाल चोर धरि मरिलौँ, जावें न मथुरा कासी ॥४॥

*कुराह चलने वाला ।

॥ शब्द १३ ॥

मन तुम नेक गहहु चित राम ॥ टेक ॥
जासु नाम सुर नर नहिं पावहिं, सत महा सुख धाम ।
पाँच पचीस तीन हैं मूसिद* उन कहँ ग्राम न ठाम॥१॥
जारहिं सहर लुटहिं बिनु लसकर, निसि दिन आठो जाम।
जालिम जोर नेक नहिं मानत, परजा दुखित बेराम† २
सत्त सतोष काया गढ़ भीतर, गहि लो सुरति सोँ नाम।
उर्ध पवन लै धरहु गगन मैं, बाँधि करहु बिसराम ॥३॥
जम जीतो घर नौबति बाजै, कियो है जोति मोकाम ।
जन गुलाल करहिं बादसाही, नूर तजल्ली नाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

जो पै कोउ चरन कमल चित लावै ।
तबहीं कटै करम के फंदा, जमदुत निकट न आवे ॥१॥
पाँच पचीस सुनि थकित भये हैं, तिरगुन ताप मिटावै ।
सतगुरु कृपा परम पद पावै, फिर नहिं भव जल धावै॥२
हर दम नाम उठत है करारी, सतन मिलिजुलि पावै ।
मगन भयो सुख दुख नहिं व्यापै, अनहद ढोल बजावै ३
चरन प्रताप कहाँ लगि बरनैाँ, मो मन उक्ति न आवै ।
कहँ गुलाल हम नाम भिखारी, चरनन मे घर पावैं ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

अगम पुर नौबति धुनि जहँ बाजई ।
घन गरजै मोती तहँ बरसै, उलट गगन चढ़ि गाजई ॥१
ससि औ सूर तहाँ नहिं दिखियत, एकै ब्रह्म बिराजई ।
आवै न जाय मरै नहि जीवै, कुहुकि कुहकि मन पागई२

*लुटेरे । †बीमार ।

॥ शब्द १९ ॥

सहज सुख दिन दिन हो, भजि लेहु आनँदराय ॥टेक॥
प्रेम प्रीत धरि रीत चरन सों, इत उत चित नहिं जाय।
सुरति निरति ले गवन कियो है,काल निकट नहिं आय॥१॥
आपु अपन को चीन्हत नाहीं, निसि दिन धंधे धाय।
मोर तोर मँ लपट रह्यो है, भोंदू भटका खाय ॥२॥
संत साध की रीति न जाने, देवहरि पूजे धाय ।
लोक वेद महँ अरुझि रह्यो है, जन्म पदारथ जाय ॥३॥
अगम अगोचर गोचर करि कै, सतगुरु बचन सहाय।
कहै गुलाल तब जन्म सुफल भयो, घरही मँ घर पाय ॥४

॥ शब्द २० ॥

हे मन धोवहु तन कै मैली ।
यह संसार नहीं सूझत घट, खोजत निसु दिन गैली ॥१॥
नहीं नाव नहिं केवट बेड़ा, फिरत फिरत दिन ऐली।
पाँच पचीस तीन घट भीतर, कठिन कलुख जिय मैली ॥२॥
गुरु परताप साध की सगति, प्रान गगन चढ़ि सैली।
कहँ गुलाल नाम भयो मेला, जत्म सुफल तब कैली ॥३॥

॥ शब्द २१ ॥

हे मन सुन्दर सेत सोहाई ।
उदित उजल छवि वरनि न आवे, सेत फटिक रोसनाई ॥१॥
अजर जरे औ बरे अधर मँ, मानिक जोति जगाई ।
कोटिन चंद सूर छवि कोटिन, चरनन की बलि जाई ॥२॥
पूरन ब्रह्म मिल्यो अविनासी, उलटि निरंतर छाई।
सिव के संग सक्ति गुन गावहिं, उमँगि उमँगि रस पाई ॥३॥

ऐसो प्रभु भागन हम पायो, सतगुरु की बलि जाई ।
जन गुलाल राम को सेवक, मिल्यो निसान बजाई ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

सुमिरहु रे रामराय चरना,
जेहि सुमिरे छुटि आवा गवना ॥टेक॥
पाँचहिं बाँधि पचीसो बाँधहु,
तीन देव बसि करु अपना ॥१॥
काम क्रोध के मसल मेठावहु,
दुविधा दुमति दूरि करना ॥२॥
मन राजहिं बसि करि समुझावहु,
माया मोह पकरि धरना ॥३॥
सहज समाधि हृदय महँ लावहु,
ज्ञान ध्यान सुचि* दृढ़ करना ॥४॥
सत्त सरूप सदा भरि निरखहु,
लपटि रहो गुरु के चरना ॥५॥
कहे गुलाल सुनो भाई संतो,
बहुरि न होय जरा मरना ॥६॥

॥ शब्द २३ ॥

राम राम राम राम जेकरे जिय आवै ।
प्रेम पूर्न दृढ बिराग सोई यह पावै ॥१॥
सतगुरु जब दियो प्रसाद प्रीत हू लगावै ।
तन मन न्योछावरि वारि चरन में समावै ॥२॥

* निर्मल ।

ऐसो प्रभु भागन हम पायो, सतगुरु की बलि जाई ।
जन गुलाल राम को सेवक, मिल्यो निसान बजाई ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

सुमिरहु रे रामराय चरना,
जेहि सुमिरे छुटि आवा गवना ॥टेक॥
पाँचहिं बाँधि पचीसो बाँधहु,
तीन देव बसि करु अपना ॥१॥
काम क्रोध कै मसल मेटावहु,
दुविधा दुमति दूरि करना ॥२॥
मन राजहिं बसि करि समुझावहु,
माया मोह पकरि धरना ॥३॥
सहज समाधि हृदय महँ लावहु,
ज्ञान ध्यान सुचि* दृढ़ करना ॥४॥
सत्त सरूप सदा भरि [illegible]हु,
लपटि रहो गुरु के चरना ॥५॥
कहे गुलाल सुनो भाई संतो,
वहुरि न हाेय जरा मरना ॥६॥

॥ शब्द २३ ॥

राम राम राम राम जेकरे जिय आवै ।
प्रेम पूर्न दृढ़ विराग सोई यह पावै ॥१॥
सतगुरु जब दियो प्रसाद प्रीत हू लगावै ।
तन मन न्योछावरि वारि चरन मैं समावै ॥२॥

* निर्मल ।

अनुभव घर कै सुधियो न जानत,
का सोँ कहूं गँवार ।
कहै गुलाल सबै नर गाफिल,
कैान उतारै पार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हे मन ऐसी बनिज लदावो ।
पाँच पचीस तीनि आपा मँ,
कसि कै गगन गुफा ठहरावो ॥ १ ॥
सुन्न सिखर पर बाजन बाजै,
सुनत सुनत मन भावो ।
लवकै* बिजुली मोती बरसै,
चूँगत चुँगत अघावो ॥ २ ॥
चाँद सूर तहवाँ नहिँ दिखियत,
निसु दिन आनँद भावो ।
काम क्रोध की गरदन मारो,
अनुभव अमल चलावो ॥ ३ ॥
उमँगि उमँगि प्रभु के रँग रातो,
पुलकित† कंठ लगावो ।
जन गुलाल पिय प्यारी खसम की,
जम सिर डंक‡ बजावो ॥ ४ ॥

* चमकती है । † उमग से । ‡ डंका ।

॥ शब्द ५ ॥

नर करबौ कवन विचार, लोगवा पाहुन ॥टेक॥
साँझ सकार रैन दिन धावहि, सबहि करत ब्योहार ।
भर ढिंढ़* खाइन जनम गवाइन, काहू न आपु सँभार १
पाँच पचीस नगर के वासी, मनुवाँ है फउदार† ।
मारि लूटि कै डाँड़ लेतु है, का तुम करब गँवार ॥ २ ॥
समय गये कोउ सग न साथी, धन जोवन परिवार ।
जम राजा जब धै लै चलि हैं, छुटि है सकल पसार ॥३॥
कुसुम सिंगार पहिरि मति भूलो, ढरत न लागै बार ।
कहत गुलाल सबै नर गाफिल, जम का करिहै हमार॥४

॥ शब्द ६ ॥

लागो रँग झूठो खेल बनाया ।
जहँ लगि ताको सबै पसारा, मिथ्या है यह काया ॥१॥
मोर तोर छूटत नहिं कबहीं, काम क्रोध अरु माया ।
आतम राम नहीं पहिचानत, भोंदू जन्म गँवाया ॥ २ ॥
नेम कै आस धरत नर मूढहु, चढत चरख दिन जाया ।
घुमत घुमत कहिं पार न पावै,का लै आया का लै जाया३
साध सगति कीन्हे नहिं कबहीं, साहब प्रीति न लाया ।
कहँ गुलाल यह अवसर बीते, हाथ कछू नहिं आया ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

अभि‡ अतर ही लै लाव मना,
ना तौ जन्म जन्म जहड़ाई§ हो ॥टेक॥

*पेट। †सेनापति । ‡घट । §भरमना ।

धन दारा सुत देखि कै, काहे बौराई हो ।
काल अचानक मारिहै, कोउ संग न जाई हो ॥१॥
धीरज धरि संतोष करु, गुरु वचन सहाई हो ।
पद पंकज अंबुज करु नवका, भवसागर तरि जाई हो ।
अनेक बार कहि कहि के हारो, कहँ लग कहौ बुझाई हो ।
जन गुलाल अनुभौ पद पावो, छुटलि सकल दुनियाई हो ॥३

मन माया का अंग

॥ शब्द १ ॥

मन तुम काहे न हरि गुन गावो,
कोटिन जन्म भुलावो ॥ टेक ॥
घर मेँ अमृत छोडि के रे,
फिरि फिरि मदिरा पावो ।
छोड़हु कुमति मूढ़ अब मानहु,
बहुरि न ऐसो दावो ॥ १ ॥
पाँच पचीस नगर के बासी,
उन्हेँ लिये सँग धावो ।
बिनु पर उड़त रहत निसु बासर,
ठौर ठिकान न आवो ॥ २ ॥
जोगी जती तपी निर्बानी,
कपि ज्यूँ बाँधि नचावो ।
सन्यासी बैरागी मौनी,
धरि धरि नर्क मेँ नावो ॥ ३ ॥

अब की बार दाव है मेरो,
छोड़ौं न राम दोहाई ।
कहै गुलाल अवधूत फकीरा,
राखौं जँजीर भराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

संतो नारि सकल जग लूटा ।
ब्रह्मा बिस्नु सीव सनादिक,
सुर नर मुनि नहिं छूटा ॥ १ ॥
नवो नाथ सिद्ध चौरासी,
नारद रिषि दुरवेसा* ।
जोगी जंगम तपि बैरागी,
गन† गंधर्व अरु सेसा ॥ २ ॥
लक्ष चौरासी जीव जहाँ लग,
ज्ञान बुद्धि हर लीन्हा ।
तीन लोक मे जाल पसारो,
मोह के वसि सब कीन्हा ॥ ३ ॥
बज्र बाँध सब ही को बाँध्यौ,
बाँधी बाँधि नचाया ।
कहैं गुलाल कोऊ जन बाचे,
जिन सतगुरु पूरा पाया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

संतो नारि सों प्रीति न लावै ।
प्रीति जो लावै आपु ठगावै,
मूल बहुत को गावै ॥ १ ॥

*फकीर । †छोटे छोटे देवता जो शिव जी की सेवा में रहते हैं ।

गुरु को वचन हृदय लै लावै,
पाँचौ इंद्री जारै ।
मनहिं जीति माया वसि करिकै,
काम क्रोध को मारै ॥ २ ॥
लोभ मोह ममता को त्यागै,
तृस्ना जीभि निवारै ।
सील संतोष सो आसन माड़ै,
निसु दिन सब्द विचारै ॥ ३ ॥
जीव दया करि आपु संभारै,
साध संगति चित लावै ।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी,
बहुरि न भवजल आवै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

संतो कठिन अपरबल नारी ।
सबहीं बरलहि* भोग कियो है,
अजहू कन्या क्वारी ॥ १ ॥
जननी ह्वै के सब जग पाला,
बहु विधि दूध पियाई ।
सुंदर रूप सरूप सलोना,
जोय† होइ जग खाई ॥ २ ॥

*विवाह करके । †जोरू ।

मोह जाल सोँ सबहिं वझायो,
जहँ तक है तन धारी ।
काल सरूप प्रगट है नारी,
इन कहँ चलहु सँभारी ॥ ३ ॥
ज्ञान ध्यान सब हीं हर लीन्हो,
काहु न आपु सँभारी ।
कहै गुलाल कोऊ कोउ उबरे,
सतगुरु की बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अधम मन जानत नाहीं राम ।
भरमत फिरै आठ हू जाम ॥ १ ॥
अपनो कहा करतु है सबही, पावत पसु आराम ।
घुरबिनिया* छोड़त नहिं कबहीं,
होइ भोर भा साम ॥ २ ॥
उडत रहत बिना पर जामे, त्यागि कनक ले ताम† ।
नीक वस्तु के निकट न लागे, भरत है झोरी खाम‡ ॥३
अब की बार कहा करु मेरो, छोडो अपनी हाम§ ।
कह गुलाल तोहिं जियत न छोडौं, खात दोहाई राम ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

अधम मन राम न जान गँवारो ।
या मन तें केते अरुझाने, माया झूठि बिस्तारो ॥ १ ॥
यहि परिपच देखि जनि भूलहु, कारन सबै बिचारो ।
हर दम पलक थीर नहिं पैहो, छिन महँ काल सँघारो २

*कूड़ा चुनने की आदत । †ताँबा । ‡कच्ची । §हूँगता ।

काम क्रोध मद लोभ न छूटत, धर्महीन औतारो ।
ऐसो समय बहुरि नहिं पैहो, कहत हौं बारंबारो ॥३॥
जे नर सरन राम की आये, ता को कौन बिगारो ।
कहै गुलाल राम को सेवक, सतो कइल बिचारो ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

मोर मन मतवलवा रहल लोभाय ॥ टेक ॥
बटिया न चलत उवट* देत पाँय ।
तजि अमृत बिषही फल खाय ॥१॥
छोड़लस घर बन फिरत बहाय ।
अकरम काम करत न लजाय ॥२॥
का सों कहौं दुख कहल न जाय ।
करत अनीत न अंग समाय ॥३॥
कह गुलाल हम सतगुरु पाये ।
मन बाँधल हम सहज समाये ॥४॥

करम भरम कुल-कान आदिक का निषेध और उपदेश गुरु व शब्द भक्ति का

॥ शब्द १ ॥

अस मन रहु गुरु चरन पास,
चित चकोर जस चंद आस ॥१॥
गुरु मरजादा† कहि न जाय,
कोटि जतन जो रचि बनाय ॥२॥

*कुराह । †बड़ाई ।

जिन जाना सिर चरन रेनु,
गुरु के बचन जस काम धेनु ॥३॥
अष्ट जाम जाके बरत जोत,
बिमल बिमल धुनि उदित होत ॥४॥
गगन मँडल मे बजत तूर,
धन सतगुरु वहाँ रहत पूर ॥५॥
अति आनँद वहाँ उठत बसंत,
गुरु कै फागु लै खेलत संत ॥६॥
कह गुलाल मेरी पुजलि आस
सतगुरु बुल्ले दिहल बास ॥७॥

॥ शब्द २ ॥

मन तुम कपट दूर लुटाव।
भटक को तुम पंथ छोड़ो, सुरत सब्द समाव ॥१॥
करत चाल कुचाल चालत, मकर मेल सुभाव।
तीन तिरगुन तपत दिनकर, कैसहू बुझलाव ॥२॥
अति अधीन मलीन माया, मोह मेँ चित लाव।
अगम घर की खबरि नाहीं, मूढ़ता सच पाव ॥३॥
सुन्न सिखर सरोज* फूलो, बंक नालहि जाव।
कह गुलाल अतीत पूरन, आपु मेँ घर पाव ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

भाई रे धोखे सब अरुझाना।
सब्द सरूप नहीं पहिचानहिं, तीरथ ब्रत लिपटाना ॥१॥

*कँवल।

कोउ पंच अगिन अधोमुख झूलै, कोऊ तारी लावै।
कोउ जल सैन पवन धुनि* लावै, बाँह उठाय सुखावै॥२
माला पहिरै तिलक बनावै, काथा† गूदर नावै।
मन मुरीद होवै नहिं जब लै, बिरथा भेख बनावै॥३॥
कोऊ जोग जज्ञ तप ठानै, कोऊ गुफा मैं बासा।
षट दरसन से जाय न पारे, सब को काल गरासा॥४॥
झूठि आस बिस्वास करत है, सुन्न‡ सदा लपटाना।
कह गुलाल कोउ कहन न मानै, भरमत फिरत दिवाना।

॥ शब्द ४ ॥

काह कहौं कछु कहत न आवै, नाहक जग बौराई हो।
अपनो नाह§ नेक नहिं जानहिं, पर पूरुष पहँ जाई हो१
घर घर कलस लेइ अर राखहिं, बहु बिधि रचहिं बनाई हो॥
गावहिं पचरा‖ मूड़ कँपावहिं, बोरलहिं¶ सकल कमाई हो॥२
ऊँच नीच जिव सबहीं मारहिं, बैठहिं देव की नाईं** हो।
झूठ बचन कहि कै मन लावहिं, जस अंधा बिपिन††
भुलाई हो॥३॥
आपु अपन को चीन्हत नाहीं, कुल की लाज लजाई हो।
काल दंड धैकै जब मिसिहै‡‡, भुलिहै सब चतुराई हो॥४॥
आपु अपन के सबहिं सयाने, हम बौराये भाई हो।
कहै गुलाल बहि गये सयाने, हमरे कही न जाई हो॥५॥

*स्वाँसा से शोर्ट का जाप। †कथरी। ‡खाली। §खसम। ‖देवीपूजा मे जो गीत गाई जाती है। ¶डुबा दी। **तरह। ††बन। ‡‡मलैगा।

॥ शब्द ५ ॥

नाम रस अमरा है भाई, कोउ साध संगति तेँ पाई ॥टेक॥
बिन घोटे बिन छाने पीवे, कौड़ी-दाम न लाई।
रंग रंगीले चढ़त रसीले, कबहीं उतरि न जाई ॥१॥
छके छकाये पगे पगाये, झूमि झूमि रस लाई।
बिमल बिमल बानी गुन बोलै, अनुभव अमल चलाई ॥२
जहँ जहँ जावे थिर नहिं आवे, खोलि* अमल लै धाई।
जल पत्थल पूजन करि भानत, फोकट गाढ बनाई† ॥३॥
गुरु परताप कृपा तेँ पावे, घट भरि प्याल‡ फिराई।
कहैँ गुलाल मगन ह्वै बैठे, भगिहै हमरि बलाई ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

देखो संतो एक अजगूता§, सुंदर घर लूटहिं जमदूता ॥१
इहवाँ देखो उहवाँ अंध, उहवाँ देखो इहवाँ फंद ॥२॥
काटै मूड चढ़ावै देवा, इह देखो उह का करि सेवा ॥३॥
जन्म जाति बैठो बहु भाँती, इहँ देखा उहँ जाति न पाँती ॥४
सुत धन माल पिता अरधंग, इहँ देखो उहँ काको संग ॥५
कहैँ गुलाल यह मन को फेर, मन जीते सो पूरा सेर ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

साधो जन राम नाम भजिये,
एक सिवाय और सब तजिये ॥१॥
आदि ब्रह्म की उपजी इच्छा,
तब ऊठो चेतन्न परिच्छा ॥२॥
चेतन सब्द भयो इक ठाँई,
पाँच तत्त ले जग उपजाई ॥३॥

*घोया। †सैंत में गढ़ के बनाया है। ‡प्याला। §अचरज।

चारि खान को किया पसार,
सुर नर नाग सबै औतार ॥ ४ ॥
माया मोह सब रच्यो बनाई,
चढ़त चरख फेरत दिन जाई ॥ ५ ॥
लोक वेद के परे हैं ख्याल,
बाझि मुए नर माया जाल ॥ ६ ॥
सकी बकी* सब गइल हिराई,
प्रभु बिन तोकहँ कौन छोड़ाई ॥ ७ ॥
अनेक रंग को सुखद बनाया,
निस्चै जानु ठगिन है माया ॥ ८ ॥
घर घर फाँस लिये कर धाई,
बच्यो सोई जो गुरु सरनाई ॥ ९ ॥
बिनु हरि भजन न होवै थीर,
सगति होय जो पावै पीरा ॥ १० ॥
तब यह धोखा मिटै रे भाई,
नहि तो घूमत फिरै बहाई ॥ ११ ॥
जो जिय जानै एकै रूप,
भटक न करु कहिं अवर सरूप ॥ १२ ॥
तृस्ना तामस बुरा रे भाई,
सत्त बिना कछु काम न आई ॥ १३ ॥
जन्त्र मंत्र करै कर्म अनेक,
अपने अपने कुल कै टेक ॥ १४ ॥

याही मत संसार भुलाई,
ज्ञान हीन कैसे गति पाई ॥ १५ ॥
जोग जज्ञ जो करै कराई,
दान धर्म्म मे बहु मन लाई ॥ १६ ॥
कहै गुलाल यह पाखंड भाई,
आपु न चीन्हहु का बैाराई ॥ १७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

रसना राम नाम लव लाई ।
अंतरगते प्रेम जो उपजै, सहज परम पद पाई ॥ १ ॥
सतगुरु वचन समीर* धीर धरि, भाव सो ब्रंद लगाई ।
उड़ै हंस गगन चढ़ि धावै, फाटि जाय भ्रम काई ॥ २ ॥
जोग यज्ञ तप दान नेम व्रत, यह मोहीं नहिं आई ।
संतन के चरनोदक लै लै, गिरा† जूँठ मैं पाई ॥ ३ ॥
कहा कहौं कछु कहल न लागै, नाहक जग बैाराई ।
कहैं गुलाल राम नहि जानत, खुझिहैं‡ हमरी बलाई ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

मोर मतवलवा नाम मद मातल,
प्रेम लगन हिये लाई हो ।
आठो जाम रैन दिन मातल,
और कहूं नहिं जाई हो ॥ १ ॥
उनमुनि धुनि लै भाठी साज्यो,
पट रस अधर चढ़ाई हो ।
लैा की पवन फेरत जल भरि भरि,
सींचत मूल सोहाई हो ॥ २ ॥

*वायु । †पत्थर हुआ । ‡झुँझलाना ।

चूवत सिखर भरत घटभरि भरि, धै के सुरत उतारी हो।
चाखत मनुवाँ मगन मन मानो, लेत है अमी करारी हो ॥३॥
सत्त सब्द कै नेजा बाँध्यो, ओगरत* नाम अगारी† हो।
कहैं गुलाल संत जन पीवहिं, वाही लगन हमारी हो ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

नाम रस भला है रे भाई।
कोइ सानि जोगेसर खाई ॥ टेक ॥
काया कूँड़ी साफ बनायो, तिरबिधि बिजया‡ नाई।
घोटा§ पवन को सितल बनायो, छानु सिखर पर जाई ॥१॥
चाखत मनुवाँ भयो है दिवाना, छकि छकिअमल छकाई।
हर हर लहर लेहि रस भरि भरि, अनतहिं जाइ बलाई ॥२॥
जिन पायो तिन हीं को भायो, आलम‖ रहल लजाई।
माया मोह में लपटि रहो है, काँटहिं काँट अरुझाई ॥३॥
संत सभा मैं फिरत करारी, अपनी अपनी भाई¶।
कहैं गुलाल सादर बिनती करि, किछु किछु हमहूं पाई ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

सत्त सब्द तहँ होय बेनु तहँ उठै बधावा ॥१॥
बाजै अनहद घंट बंसी रव** सुन में भावा ॥२॥
बैठि सिंघासन जाय दसहुं दिसि मानिक छावा ॥३॥
कहैं गुलाल सोइ भक्त अभैपुर डंक बजावा ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

झूँठ सेवा नर करत आस, नाम बिना नहिं पैहै। वास ॥१॥
तीरथ बरत देव आराध, केहु पूँछहि ना जम बाँधहि बाध††२

*टपकती है। †शराब। ‡भाँग। §सोँटा। ‖संसार। ¶भाव। **शब्द।
††रस्सी।

यहि विस्वास भुलै मत कोय,मॉझ धार मे वोरिहैं सोय ॥३॥
लोक वेद महॅ रत ससार,राम न चीन्हहिं मुरख गॅवार॥४॥
ऐसहि समय गये दिन वीति,वार न ढहत वालु के भीति ॥५॥
कहँ गुलाल मूढ हम भाई, सवहिं सयाने हम वौराई ॥६॥

॥ शब्द १३ ॥

ससि औ सूर पवन भरि मेला, दृढ करि आसन वैठु अकेला१
उलटै नाल गगन घर जावै, विगसै कॅवल चंद दरसावै॥२॥
घंटा रव तहॅ वाज निसाना,अनहद धुन सुनियत विनु काना
सुन्न असुन्न में डोर वॅधाना,उड़े हंस चढि करत पयाना॥४॥
अगमअगोचरअविगत खेला,प्रान पुरुप तहॅ करत है मेला५
मन अरु पवन सहज-घर आयो,ऐसी गतिसतन मनभायो६
मेटल सुन्न मिलल परगासा,जन्म जन्म कै पूजलि आसा॥७=
जनगुलालसतगुरु वलिहारी, जातिपॉतिअवछुटलहमारी॥

॥ शब्द १४ ॥

हमरे राम नाम वस्तू है, खलक लेन चहे घौंगा* ।
हमरे कटक फौज कछु नाहीं, हमरे धन सुत जोगा॥१॥
हमरे मुलुक खजाना नाहीं, रैयत नहिं वस लोगा ।
हमरे पूरन नाम भरो धन, दुनिया देखि मरै सोगा॥२॥
हमरे सग साथ नहिं कोई, अंध भये सव खोजत लोगा ।
हमरे वेद कितेवैा नाहीं, हमरे व्रत नहिं भोगा ॥३॥
राजा रक छत्रपति देखो, काल खड्ग मारत सव खोजा ।
कहै गुलाल निःकल्प रूप भयो, जगत मुए करि रोजा ॥४॥

*घौंधा, कौड़ी ।

प्रेम ।

॥ शब्द १ ॥

अविगत जागल हो सजनी ।
खोजत खोजत सतगुरु पावल,
ताहि चरनवाँ चितवा लागल हो सजनी ॥ टेक ॥
साँझ समय उठि दीपक बारल,
कटल करमवा मनुवा पागल हो सजनी ॥१॥
चललि उवटि* बाट छुटलि सकल घाट,
गरजि गगनवा अनहद बाजल हो सजनी ॥२॥
गइली अनँदपुर भइली अगम सूर,
जितली मैदनवा नेजवा† गाड़ल हो सजनी॥३॥
कहँ गुलाल हम प्रभुजी पावल
फरल लिलरवा पपवा भागल हो सजनी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

लागलि नेह हमारी पिया मोर ॥ टेक ॥
चुनि चुनि कलियाँ सेज बिछावौं,
करौं मैं मंगलचार ।
एको घरी पिया नहिं अइलैं,
होइला मोहिं धिरकार ॥ १ ॥
आठो जाम रैन दिन जोहौं,
नेक न हृदय बिसार ।
तीन लोक के साहब अपने,
फरलहिं मोर लिलार ॥ २ ॥

*कठिन । †भाला ।

सत्त सरूप सदा हीं निरखौं,
संतन प्रान अधार ।
कहैं गुलाल पावौं भरि पूरन,
मौजै मौज हमार ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

आजु मोरे अनँद वधावा जियरा कुहकैला,
सुनत सुनत सुख पाय ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तिनि* चाचरि गावहिं,
सो सुख वरनि न जाय ॥ १ ॥
गगन मँडल में रास रचो है,
झमक रहो है छाय ॥ २ ॥
प्रेम पियारा प्रगट भयो जव,
ब्रह्म पदारथ पाय ॥ ३ ॥
थकित भयो सुधि बुधि हर लीन्ह्यो,
इत उत कहीं न जाय ॥ ४ ॥
कहैं गुलाल भक्ति वर पायो,
छूटलि सवहि वलाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मैं वलि वलि जावँ मेरो मन लागल प्रभु पंधा ॥ टेक ॥
प्रेम नेम लै लावल हो पावल गुरु रीती ।
पुलकि पुलकि छवि देखल गावल निर्गुन गीती ॥१॥
या तन समय सुहावन हो जानहु परतीती ।
राम विना कस जीवन हो वालू ज्यों भीती ॥२॥

*तीन ।

सासु सोहागिन बिलसहि* हो ननदी बिपरीती ।
गाँव के लोग नहिं आपन हो सवति करै चोती† ॥३॥
सुनहू सखियाँ सहेलरि हो जो करै कहल हमार ।
भवजल नदिया भयावनि हो कैसे उतरब पार ॥४॥
उलटि पवन घर सोधल हो सब रहल लजाय ।
जगमग जगमग त्रिकुटी हो देखि रहल लोभाय ॥ ५ ॥
गंग जमुन बिच मडप हो घर अगम अवास ।
बिनु पर हंसा उड़ि गवन्यो तहँ भूख न प्यास ॥ ६ ॥
पाप पुन्न नहिं दुख सुख हो नहि रोग न सोग ।
सुखमन सार अमी रस हो तहँ जोग न भोग ॥ ७ ॥
गगन मगन धुनि गाजै हो देखि अधर अकास ।
जन गुलाल बसि हरि पद हो तहँ करहि निवास ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५ ॥

आजु झरि बरखत, बुद सोहावन ।
पिया के रीति प्रीति छवि निरखत,
पुलकि पुलकि मन भावन ॥ १ ॥
सुखमन सेज जे सुरति सँवारहिं,
झिलमिलि झलक दिखावन ।
गरजत गगन अनंत सब्द धुनि,
पिया पपीहा गावन ॥ २ ॥

*बिलास करती है । †चिट्टा लगाना ।

गनग मँडल में परम पद पावल जमहिं कइल घर छारी।
जन गुलाल सोहागिन पिय सँग मिलली भुजा पसारी॥३

॥ शब्द १० ॥

अब मो सौं हरि सौं जुरलि सगाई।
ब्रह्मा वेद उचारत निसु दिन
अनुभव तूर बजाई ॥ १ ॥
संत साध मिल लगन धराई
प्रेम कै बात चलाई।
सुन्न सिखर पर माड़ो छावो
सहज के रूप लगाई ॥ २ ॥
गगन मँडल में कोहबर राचो
लीखत चित्र बनाई।
सुरति निरति लै सखि सब गावहिं
घर ही नव निधि पाई ॥ ३ ॥
लोक वेद नेवछावरि वारौं
जुग जुग मैल बहाई।
कहँ गुलाल परम पद पावो
सतगुरु व्याह कराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मन मोर बोलै हरि हरि राम।
और देव से नाहीं काम ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति नितहीं चित लाय,
रैन दिवस कतहूं नहिं जाय ॥ २ ॥

पाँच पचीस लै बैठि अकास,
केल करत कोउ सग न पास ॥ ३ ॥
सुन्न सिखर पर करि वहु रग,
दसौ दिसा में उठत तरंग ॥ ४ ॥
कृपा कियो गुरु भयो निस्तार,
जन गुलाल भजि उतरहिँ पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

राम राम राम नाम सोई गुन गावै ।
आपु मारि पवन जारि गगना गरजावै ॥ १ ॥
अतिही आनद कंद* बानि हू सुनावै ।
सतगुरु जब दया जानि प्रेम हूं लगावै ॥ २ ॥
अगम जोति झरत मोति झिलमिल झरि लावै ।
चित चकोर निरखि जोति आपु में समावै ॥ ३ ॥
काम क्रोध लोभ मोह तन मन विसरावै ।
सोई सुधित† धीर सोइ फकीर सोइ कहावै ॥ ४ ॥
जाति मान कुल कै कान गरब हू गँवावै ।
कह गुलाल सोई सत आपु हीं कहावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मन तुम सदा, चरन चित लाय ।
जासु नाम सुर नर मुनि तारे, निरखत कलुख‡ नसाय॥१॥
पाँच पचीस तीन लइ बाँधो, उलटी नाव चलाय ।
तिरबेनी तट आसन माँडो, गगन मंडल मठ छाय ॥२॥

*समूह । †सुबुद्धि । ‡पाप ।

प्रेम प्रीत कै भोजन कीन्ह्यो अमृत पत्र जेंवाय।
अनत जन्म पर पाहुन आये संत उधारन राय ॥३॥
कह गुलाल साहब घर आये, सेव करब चित लाय ॥४॥
अधर महल पर बैठक पायौं, अते* जाय बलाय ॥५॥

॥ शब्द १९ ॥

अँखियाँ प्रभु दरसन नित लूटी।
हौं तुव चरन कमल में जूटी ॥१॥
निर्गुन नाम निरंतर निरखौं अनंत कला तुव रूपी।
बिमल बिमल बानी धुनि गावौं कह बरनौं अनुरूपी ॥२॥
बिगस्यो कमल फुल्यो काया बन, झरत दसहुँ दिस मोती।
कह गुलाल प्रभु के चरनन सों डोरि लगी भर† जोती ॥३॥

॥ शब्द २० ॥

हौं अनाथ चरनन लपटानो।
पंथ और दिस सूझत नाहीं छोड़ो तौ फिरौं भुलानो ॥१॥
जासु चरन सुर नर मुनि सेवहिं कहा बरनि मुख करो बखानो।
हौं तो पतित तुम पतित-पावन गति औगति एको नहिं जानो ॥२॥
आठो पहर निरत धुनि होवै उठत गुंज चहु दिसा समानो।
झरि झरि परत अगार‡ नैन भरि, पियत ब्रह्म रुचि अमी अघानो ॥३॥
बिगस्यो कमल चरन पायो जब यह मत संतन के मन मानो।
जन गुलाल नाम धन पायो निरखत रूप भयो है दिवानो ॥४॥

*और जगह। †तक। ‡शराब का फूल।

॥ शब्द २१ ॥

मेरो मन प्रभु सों लागल हो,
जागल प्रेम मन पागल हो ॥ १ ॥
घड़ि घड़ि पल पल जोति मिलो रहै,
काम क्रोध मद त्यागल हो।
अगम अगोचर सत्त निरंजन,
बाजन अनहद बाजल हो ॥ २ ॥
एकै सत्त दसा एकै लिये,
एकै ब्रह्म बिराजल हो।
आनँद एक भाव निस बासर,
एक भक्ति हम माँगल हो ॥ ३ ॥
अगम भेद सूझत नहिं बूझत,
सहज सहज होइ जागल हो।
कह गुलाल साहब किरपा कियो,
दै कै तिलक निवाजल* हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

हरि पुर चलु याही विधि जहँ संतन बास ॥ टेक ॥
सतगुरु सत्त लखावल पावल मत मूल।
प्रेम प्रीत चित लावल मन देखल अस्थूल ॥ १ ॥
चंद सूर घर आयल तिरबेनी तीर।
निरखि निरखि गति साजल दरसन रघुबीर ॥ १ ॥
सुरति निरति लै जाइब घर अगम अवास।
तहवाँ प्रान अनादित काटल जम फाँस ॥ ३ ॥

*बख़्शिश की।

लोक पुनित* तीरथ व्रत राखहिं सब आस ।
जन गुलाल सत बोलहिं चरनन विस्वास ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

अरे मोर छैला भँवरा गैलो काहू न बुझाय ॥ टेक ॥
इक अँधियारी मग चलल न जाय ।
वाझल भँवरा कौनी गति लाय ॥ १ ॥
बिरह कै बाँधल भँवरा खसि खसि जाय ।
सँग लागल भँवरा भैल बलाय ॥ २ ॥
प्रेम बझावल भँवरा चरन लगाय ।
घर आय भँवरा रहल लोभाय ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल थकलीं बृज नारी ।
हम धन मिललीं भुजा पसारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

पावल प्रेम पियरवा हो ताहि रे रूप ।
मनुवा हमार बियाहल हो ताहि रे रूप ॥ १ ॥
ज्ञान कै गछवा† लगावल हो ताहि रे तर ।
मनमत-कइल बधंवर हो ताहि रे तर ॥ २ ॥
ऊँच अटारी पिया छावल हो ताहि रे पर ।
गुरु गम गाँठि दियावल हो ताहि रे पर ॥ ३ ॥
अगम धुनि बजन बजावल हो ताहि रे पर ।
मोतियन चौक पुरावल हो ताहि रे पर ॥ ४ ॥
दुलहिन दुलहा मन भावल हो ताहि रे मन ।
भुज भर कंठ लगावल हो ताहि रे मन ॥ ५ ॥

*पवित्र । † पेड़ ।

गुलाल प्रभू वर पावल हो ताहि रे पद ।
मनुवा प्रीत लगावल हो ताहि रे पद ॥ ६ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सुन्न सिखर चढ़ि जाइब हो, बाजत अनहद तार ॥टेक॥
उमँगि उमँगि सखि गावहिं हो, मानिक देत्र लिलार ॥१॥
उलटी नदिया सोहावन हो, सत्त सुखमना बास ॥२॥
दृढ़ कै सुरति लगावल हो, सतगुरु संग निवास ॥३॥
जीव कै ऊब* निवारहु हो, पाँच पचीस मन मार ॥४॥
यहि विधि ध्यान लगावहु हो, करम मेटो संसार ॥५॥
गावल निर्गुन मनोरवा हो, जन गुलाल मिलो यार ॥६॥

॥ शब्द २६ ॥

मन मोरा गरज समानो मन मोरा ॥टेक॥
अष्ट जाम के खेल बनो है थकित भयो तन जोरा ॥१॥
पाँच सखिन मिलि मंगल गावहि सहजहि उठै झकोरा ॥२॥
सिव सक्ती मिलि स्याम घटा पर नीझर झरत हिलोरा ॥३॥
धधकि धधकि सुदर बर राजित सतगुरु कियो गठजोरा ४॥
कह गुलाल पिय संग सोहागिनि अचल है सेँदुर मोरा ॥५॥

॥ शब्द २७ ॥

छिन छिन प्रीति लगी मोहिं प्रभु की ॥१॥
आठ पहर चित लगै रहतु है, मिटलि सकल डर उर की ।२॥
उमँगि उमँगि उज्जल जल झलकत, अनुभैा मानिक वर की॥३
कह गुलाल घर अनँद मगन भो, चढ़ि सुमेर भ्रव तार की ॥४॥

* चिन्ता, घबराहट ।

॥ शब्द २८ ॥

प्रभु जी सोँ लागल प्रीति नई ।
निरखत रूपहिं भई बावरी तन सुधि सबै गई ॥१॥
अष्ट जाम चित लगे रहतु है, प्रभुजी के परलुं पई* ।
सहज सरूप सब्द को सेहरा, सो मोहिं आन भई ॥२॥
गगन मॅंडल में बानि उठतु है, हर दम नाम नई ।
अबकी बेर कृपाल दया निधि, लोचन लाल दई ॥३॥
सोई सहीद मगन मन मौला, दोजख भिस्त गई ।
कह गुलाल घर अनॅंद मगन भो, प्रभु सिर तिलक दई॥४॥

॥ शब्द २९ ॥

सतगुरु कै परताप तो अनॅंद बधावरा ।
आजु मोरे गुरु अतिथि† करब हम भाॅवरा ॥१॥
पाॅच पचीसो सखियाॅ चैाक पुरावहीं ।
गुरु जी कै चरनोदक लै छिरकावहीं ॥२॥
तीन जना मिलि इक मत भाॅवर नावहीं ।
चन्द्र बदन सिर सेँदुर माँग बनावहीं ॥३॥
जुग जुग अचल सोहाग तो प्रीति लगावहीं ।
दुलहा बनल निरबान तो कंठ लगावहीं ॥४॥
मोतियन माड़ो छइया बजन बजाइया ।
दास गुलाल सोहागिनि कंत रिझाइया ॥५॥

॥ शब्द ३० ॥

अजर बियाह कैसे बनि आई ।
गुरु के बचन सुनि लगन लगाई ॥ १ ॥

* चरनों पड़ी । †पाहुन ।

सुनत सुनत जिव घर मन आई।
वाम्हन मत बुधि नहि ठहराई ॥ २ ॥
वर मोर तिरविधि जोग न आई।
माय मोरि अरुझैलै बाप अरु भाई ॥ ३ ॥
ऐसो नहिं कोइ व्याह कराई।
डोरिया लगलि अब कस छुटकाई ॥ ४ ॥
सनमुख ह्वै प्रभु लगन लगाई।
अष्ट जाम धुनि नौवति वजाई ॥ ५ ॥
तिरवेनी तीरहिं कलस धराई।
विपरीती* माँडो रच्यो बनाई ॥ ६ ॥
जरि गैल माँडो उदित सोहाई।
तबै प्रभु सेँदुर अचल धराई ॥ ७ ॥
कह गुलाल हम पतिवर पाई।
जावै नइहर हमरि बलाई ॥ ८ ॥

बिनती और प्रार्थना

॥ शब्द १ ॥

दीनानाथ अनाथ यह, कछु पार न पावै।
बरनौं कवनी जुक्ति से, कछु उक्ति न आवै ॥ १ ॥
यह मन चंचल चोर है, निस वासर धावै।
काम क्रोध में मिलि रह्यो, ईहै मन भावै ॥ २ ॥
करुनामय किरपा करहु, चरनन चित लावै।
सतसगति सुख पाय कै, निसु वासर गावै ॥ ३ ॥

*उलटा

अब कि बार यह अध पर, कछु दाया कीजे ।
जन गुलाल विनती करै, अपनो कर लीजे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रभुजी हूजिये जन को दयाल ।
जन अपराधी कोटि औगुनी, तौ करिये प्रतिपाल ॥१॥
सुरग पताल मृतलोक जहाँ लग, यह सब तुम्हरो ख्याल ।
जहँ पगु देउँ जहाँ लगि निरखौं, तौ बड़ ही जंजाल ॥२॥
हर दम नाम तुम्हारो लीये, फिरौं तौ तुम्हरी नाल* ।
घाटि बाढि एकौ न चलायो, लह्यौं न एकौ हाल ॥३॥
बकसो सील छिमा से दयानिधि, यह वर देहु गुलाल ।
करिये कृपा बिरद निज जन पर, चलिये अपनी चाल ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

तुम्हरी मोरे साहब क्या लाऊँ सेवा ।
अस्थिर काहु न देखऊँ सब फिरत बहेवा ॥१॥
सुर नर मुनि दुखिया देखों सुखिया नहिं केवा।
डंक मारि जम लुटत है लुटि करत कलेवा ।२॥
अपने अपने ख्याल मे सुखिया सब कोई ।
मूल मंत्र नहिं जानहीं दुखिया भै रोई ॥३॥
अबकी बार प्रभु बीनती सुनिये दे काना ।
जन गुलाल बड दूखिया दीजै भक्ती दाना ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रभुजी बरषा प्रेम निहारो ।
ऊठत बैठत छिन नहिं बीतत याही रीत तुम्हारो ॥१॥

*साथ ।

समय होय भा* असमय होवे भरत न लागत वारो ।
जैसे प्रीति किसान खेत सों तैसो है जन प्यारो ॥२॥
भक्त-बछल है बान† तिहारो गुन औगुन न बिचारो ।
जहँ जहँ जावें नाम गुन गावत जम को सोच निवारो ॥३॥
सोवत जागत सरन धरम यह पुलकित मनहि बिचारो ।
कह गुलाल तुम ऐसो साहब देखत न्यारो न्यारो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रभु को तन मन धन सब दीजै ।
रैन दिवस चित अनत न जावे नाम पदारथ पीजै ॥१॥
जब तें प्रीत लगी चरनन सों जग संगत नहि कीजै ।
दीन-दयाल कृपाल दया-निध जो आपन करि लीजै ॥२॥
ढूंढत फिरत जहाँ तहँ जग मे काहू बोध न कीजै ।
प्रभु के कृपा औ संत वचन ले हिरदे मे लिख लीजै ॥३॥
कह बरनौं बरनत नहिं आवै दिल चरबी न पसीजै ।
कह गुलाल याही बर माँगौं सत चरन मे।हिं दीजै ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रभु तुम ऐसे दीन-दयाल ।
हम अस अधम कुटिल चंडाल ॥१॥
केतिक अधम कहाँ लगि बरनौं करम धरम की जाल ।
मोर मोर करत दिन बीतल मारि लेत जम काल ॥२॥
अधम होत जो कारज सीझत पगल माय के ख्याल‡ ।
सुमति कुमति निसु बासर भोजन सोवत परो बेहाल ॥३॥
तुम अस ठाकुर परगट देखत करत सबे प्रतिपाल ।
मेरु धरनि जल थल मे साहब का जानै वह हाल ॥४॥

*या । †बाना, सुभाव । ‡माया के ख्याल में पगा हुआ है ।

सुमति सरीरहिं आवत नाहीं डालत गर में माल।
हिंदू तुरुक मझब* में लागो सुद्धि बिसरि गइ हाल ॥ ५ ॥
हम अबला बल कछु हम नाहीं प्रभु तुम ऐसे। लाल।
अब की बार यही बर पावौं लखिये अधम गुलाल ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

प्रभु तेरी माया अगम अपार।
तुम जानहु सब सिरजनहार ॥ १ ॥
सिव ब्रह्मा सब देव मुनि मोहे कीन्हो न किनहूँ बिचार।
धोखा धोख सभन मे उपुजो काहु न आपु सँभार ॥ २ ॥
छिन में पाले। छिन में पोखो छिन में करत सँघार।
तुम्हरे मोह न तुम्हरे माया मूरुख कहत हमार ॥ ३ ॥
जो जन चरन सरन लपटाने। सबहि लड़ायो† भार।
मन क्रम बचन अवर नहि जाने ता को लीन्ह उबार ॥४॥
धन्न धन्न तुम धन्न प्रभू जी साध सदा रखवार।
कह गुलाल राम को सेवक अब को सकत निहार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

गति पूरन प्रभुराया हो।
कह बरनौं बरनी नहि आवै तुम अनंत जग गाया हो ॥ १ ॥
अधम-उधारन सठ-निस्तारन खल-पावन पद पाया हो।
जा को नाम रटत सनकादिक भक्ति किसोर बढ़ाया हो ॥२॥
गोरखदत्त बसिष्ट ब्यास मुनि सुकदेव आदि जनाया हो।
अनेक साध संतोष सत्त लिये मन को ध्यान लगाया हो ॥३॥

*मजहब। †गिराया।

[श]िव ब्रह्मा जा को थाह न पावहिं नर बपुरा कत पाया हो।
[त]ा पर कृपा कियो सतगुरु ने सहजहिं हरिहिं मिलाया हो॥४॥
[म]ैं अनाथ नाथ तुम चरनन को को विनय सुनाया हो।
[क]ह गुलाल साहब आपन कियो अनहद ढोल बजाया हो॥५॥

भेद का अंग

॥ शब्द १ ॥

जो पै साँचि लगन हिय आवै।
काटै सकल करम के फंदा, आनंदपुर घर छावै॥१॥
पाँच पचीस तीन बस करिकै, सुखमन सेज बिछावै।
सुरत सोहागिन उठै गगन-मुख, तब चंदा दरसावै॥२॥
मूल चक्र गहि कै दृढ़ बाँधै, बंक नाल चढ़ि धावै।
अविगत सों यह खेल बनो है, आवागवन नसावै॥३॥
रीझि रीझि दसहू दिसि पूजै, पारब्रह्म में समावै।
जन गुलाल भइ प्यारी खसम की, रहसि रहसि गुन गावै॥४

॥ शब्द २ ॥

उलटि देखो, घट में जोति पसार।
बिनु बाजे तहँ धुनि सब होवै, बिगसि कमल कचनार॥१॥
बैठि पताल सूर ससि बाँधो, साधो त्रिकुटी द्वार।
गंग जमुन के वार पार बिच, भरतु है अमिय करार॥२॥
इँगला पिंगला सुखमन सोधो, बहत सिखर-मुख धार।
सुरति निरति लै बैठु गगन पर, सहज उठै झनकार॥३॥
सोहं डोरि मूल गहि बाँधो, मानिक बरत लिलार।
कह गुलाल सतगुरु बर पायो, भरो है मुक्ति भँडार॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

चित धरि, करहु आपु सँभार ।
सुरति डोर लगाउ गगनहिं, उठत है झनकार ॥१॥
चंद सूरज रैन दीवस, नाहिं धर्म अचार ।
मरन जीवन संग साथी, ऐसोई ब्योहार ॥ २ ॥
हूाँ कौन देखै कौन सूनै, गुन न वार न पार ।
अगम घर पर जाय बैठो, यह घर नाहि पगार* ॥३॥
प्रेम आगे नेम कैसो, सब भयो जरि छार ।
कह गुलाल जो नाम मिलिया, अछर नहि त्रिस्तार ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

मनुवा अगम अमर घर पायो ।
आठ पहर धुनि लगै रहतु है, बिनु कर डंक बजायो ॥१॥
बिनु पग नाच नचावन लागे, बिनु रसना गुन गायो ।
गावनहार के काया न माया, अनुभौ रंग बनायो ॥२॥
अर्ध उर्ध के मध्य निरंतर, त्रिकुटी जा ठहरायो ।
लवकै बिजुली उड़ै गगन मे, मुक्ता तहँ झरि लायो ॥३॥
भयो अघोर निसु बासर नाहीं, सुन्न भवन दर† पायो ।
जन गुलाल पिय मिलो है सुहागिन, आनँद जोति जगायो ।४

॥ शब्द ५ ॥

गगना गरजि गरजि मन भावन ।
चारि सखी चहुँ दिस हूै गरजत, पचएँ बरसत सावन ॥१॥

*पाही का झोपड़ा जो चंद रोज के लिये खेत मे बना लेते हैं। †द्वार।

छिमा सील संतोष सागर भरो, घनि सतगुरु जिन
अचल बनावन ।
कह गुलाल बरषा भयो पूरन, मारो घर मन रावन ॥ २ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हे मोरीसखियाँ लागलि गुरु के साँट* भइलि मनभावन॥टेक
पाँच सखी मिलि मंगल गावहिं, मोतियन चौक पुराय ।
तारी दै दै भाँवरि फेरहि, दुलहा बरनि न जाय ॥ १ ॥
चौके चार चतुर जन बैठे, आनँद बेद भनाय† ।
चंद्र लगन सिर सेंदुर बाँधल, अमर सोहाग बनाय ॥२॥
नौबति धुनि चहु ओर दसौ दिसि, माँडो‡उदित सोहाय ।
रोम रोम मनसा भै पूरन, दुलहिन पिया मन भाय ॥३॥
माँड़ो जारि बरातिन मारल, खाइल गावँ कै लोग ।
कह गुलाल हम सबहि सँघारल, पुरन भइल सब जोग ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

अचरज हम इक देखल, पंडित करहु बिचार ।
कहा कथब औ कहा सुनब, कहा करब ब्यौहार ॥ १ ॥
जगमग अचरज देखल, पंडित भइल बिचार ।
ज्ञान कथब औ धुनि सुनब, नाम करब ब्यौहार ॥ २ ॥
कहवाँ से जिव आइल, कहवाँ जिव कर वास ।
कहवाँ जीव समाइल, कहवाँ सक्ति निवास ॥ ३ ॥
ब्रह्म से जिव आइल, नाभि कँवल मैं वास ।
सुन्नहिं सक्ति समाइल, सिव घर सक्ति निवास ॥४॥

* लपेट, लगन । † पढ़ा जाता है । ‡ मँड़वा ।

अछय अभय अनुभव अनमूरति, सन सजीवन नाथ।
जन गुलाल तहँ फिरहिं करारी*, कोई संग न साथ ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

भाई मोहिं यही अचभो भारी।
तातेँ कौन पुरुष को नारी ॥ १ ॥
मनि परकासित कहिये भुवंगा, सो है कुल अधिकारी।
को पतिब्रता को अलवंता†, को बिभिचारी वारी ॥२॥
कवने नीर कवन जल कहिये, को अमृत को खारी।
को है कूप गंगाजल को है, को है सलिल डबारी‡ ॥३॥
को है कीट पतंग कौन हैं, को है नृपति भिखारी।
को है चिउँटी हस्ति कवन है, को जन्मै को मारी ॥४॥
कह गुलाल यह बूझि थको जिव, निरवल को निरवारी।
सतगुरु कृपा सत सरनागति, भवसागर तेँ उवारी ॥५॥

॥ शब्द १३ ॥

देखो संतो सुरति चढी असमान, दूजा और न आन् ॥टेक॥
जगमग जोति बरत अति निर्मल, देखि दरस कुरबान॥१॥
निरखि रूप मन सहज समानो, जम कर मरदल मान॥२॥
जन गुलाल पिय प्रेम लगन लगो, दियो सीस को दान।३॥

॥ शब्द १४ ॥

प्रान पाहुन मोर ए री मना ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीन सँग लीये, पवन चढ़ा है घोरा ॥१॥
तत्त सिंहासन बैठक दीन्हो, जगत जोत चहुं ओरा ॥२॥

*अकेला। †जिस स्त्री को हाल मे लड़का पैदा हुआ है। ‡डाबर या गड़हे का पानी।

पाँच सखी मिलि जेवन* बनावहिं, काहु न लगत निहोरा ॥३॥
पतरी† प्रेम परत है परस्पर, सुखमन भरत कटोरा ॥४॥
ज्ञान गुरू के विंजन परोसहि, साँझ सकार सवेरा ॥५॥
सबहि खियावल अपनहु खायल, चौथे पद पर डेरा ॥६॥
कह गुलाल मेरो पाहुन आयो, कबहु न करिहौं फेरा ॥७॥

॥ शब्द १५ ॥

एकै नाम अधारा, मेरे एकै नाम अधारा हो ।
परखि परखि निरखत निस वासर, जग तें भयो निनारा हो ॥ १ ॥
अष्ट कमल मे जीव वसतु है, सतगुरु सब्द विचारा हो ।
ले कै पवन हंस जब गवन्यो, त्रिकुटी भौ उँजियारा हो ॥२॥
पैठि पताल मूल बंद बाँधो, सुखमन सेज सँवारा हो ।
निरझर झरत अमी तहँ बरखत, मनुवाँ तहाँ हमारा हो ॥३॥
गगन मंडल मे नौबति बाजे, आठ पहर इकतारा हो ।
मारो ममता चित्त समानो, चौमुख दीपक बारा हो ॥४॥
छूटी देह नेह रहि इक सोँ, आदौ ब्रह्म विचारा हो ।
कह गुलाल साहब हम पायो, जम का करि है हमारा हो ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

नैहर गरब गुमनिया हो, फरलि करम कै डार ।
ससुरे सँगति नाहि जाइब हो, करबहु कौन विचार ॥१॥
सासु ननद कै झगरा हो, सवति जो हमरी अपारि ।
सइयाँ हमरे कुबुजवा‡ हो, हम धन अलप कुमारि ॥२॥

*भोजन । †पत्तल । ‡कुबड़ा यानी बूढ़ा ।

अछय अभय अनुभव अनमूरति, सत सजीवन नाथ।
जन गुलाल तहँ फिरहिं करारी[*], कोई संग न साथ ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

भाई मोहिं यही अचंभो भारी।
तातेँ कौन पुरुष को नारी ॥ १ ॥
मनि परकासित कहिये भुवंगा, सो है कुल अधिकारी।
को पतिवर्ता को अलवंता[†], को बिभिचारी बारी ॥२॥
कवने नीर कवन जल कहिये, को अमृत को खारी।
को है कूप गंगाजल को है, को है सलिल डबारी[‡] ॥३॥
को है कीट पतंग कौन हैं, को है नृपति भिखारी।
को है चिउँटी हस्ति कवन है, को जन्मै को मारी ॥४॥
कह गुलाल यह बूझि थको जिव, निरवत को निरवारी।
सतगुरु कृपा सत सरनागति, भवसागर तेँ उबारी ॥५॥

॥ शब्द १३ ॥

देखो सतो सुरति चढ़ी असमान, दूजा और न आन ॥टेक॥
जगमग जोति बरत अति निर्मल, देखि दरस कुरबान॥१॥
निरखि रूप मन सहज समानो, जम कर मरदल मान॥२॥
जन गुलाल पिय प्रेम लगन लगो, दियो सीस को दान।३॥

॥ शब्द १४ ॥

प्रान पाहुन मोर ए री मना ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीन सँग लीये, पवन चढ़ो है घोरा ॥१॥
तत्त सिँहासन बैठक दीन्हो, जगत जोत चहुं ओरा ॥२॥

---

[*]अकेला। [†]जिस स्त्री को हाल मे लड़का पैदा हुआ है। [‡]डाबर या गढ़हे का पानी।

ाँच सखी मिलि जेवन* बनावहिं, काहु न लगत निहोरा॥३॥
ातरी† प्रेम परत है परस्पर, सुखमन भरत कटोरा ॥४॥
ज्ञान गुरू के विंजन परोसहिं, साँझ सकार सबेरा ॥५॥
ावहि खियावल अपनहु खायल, चौथे पद पर डेरा ॥६॥
कह गुलाल मेरो पाहुन आयो, कबहुं न करिहौं फेरा ॥७॥

॥ शब्द १५ ॥

एकै नाम अधारा, मेरे एकै नाम अधारा हो ।
परखि परखि निरखत निस बासर, जग तें भयो
निनारा हो ॥ १ ॥
अष्ट कमल मे जीव बसतु है, सतगुरु सब्द बिचारा हो ।
ले कै पवन हंस जब गवन्यो, त्रिकुटी भौं उँजियारा हो॥२॥
पैठि पताल मूल बंद बाँधो, सुखमन सेज सँवारा हो ।
निरझर झरत अमी तहँ बरखत, मनुवाँ तहाँ हमारा हो॥३॥
गगन मंडल में नौबति बाजै, आठ पहर इकतारा हो ।
मारो ममता चित्त समानो, चौमुख दीपक बारा हो ॥४॥
छूटी देह नेह रहि इक सों, आदो ब्रह्म बिचारा हो ।
कह गुलाल साहब हम पायो, जम का करि है हमारा हो॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

नैहर गरब गुमनिया हो, फरलि करम कै डार ।
ससुरे सँगति नहि जाइब हो, करबहुं कौन बिचार ॥१॥
सासु ननद कै झगरा हो, सवति जो हमरी अपारि ।
सइयाँ हमरे कुनुजवा‡ हो, हम धन अलप कुमारि ॥२॥

*भोजन । †पत्तल । ‡कुब्जा यानी कुबड़ा ।

गाँव के लोगवा निरखे* हो, छिन छिन देंह निहार।
पार परोसिन डाहै हो, निस दिन करत कुफार† ॥३॥
घर कै मर्म नहिं जान्यो हो, महा कठिन दुख भार।
अँचरा पसार धन‡ विनवै हो, कब दहुँ मरै भतार ॥४॥
भोर भइल मन मान्यो हो, छुटल सकल संसार।
जन गुलाल सत बोलहि हो, मिललहिं कंत हमार ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

मन मगन भयो जब प्रभु पायो।
ज्ञान गुफा मे निरंतर देख्यो, अनुभौ गति तेहि आयो ॥१॥
छोड़ि करम ममता मद त्याग्यो, ससय सोक न आयो।
सहज आसन लै उड़्यो गगन मे, मुक्ता भरि भरि लायो॥२॥
फूल्यो काया उगे मनि मानिक, विमल विमल गुन गायो।
निसु बासर केवल परगासा, जम दुत निकट न आयो ॥३॥
प्रेम प्रीति हिरदे मे राखे, अनतहिं चित्त न जायो।
कह गुलाल अवधूत सोई है, भँवर गुफा घर छायो। ४

॥ शब्द १८ ॥

तेलिया रे तेल पेर बनाई।
कोल्हुवा हाँकै घनिया लगाई ॥ १ ॥
गाँव के लोगवा तेल को जाई,
पनियाँ मिलाय देत डहँकाई§ ॥२॥
यह तेलिया अब भयल जँजाल,
का मैं कहौं ठाकुर‖ मतवाल ॥ ३ ॥

*झुरते हैं। †खुराफात, झगड़ा टंटा। ‡स्त्री। §ठग लेना। ‖जमींदार।

कह गुलाल यह निगुन अपार,
तेलिया बाँधल बरद की सार* ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

मैं तो राम चकरियाँ† मन लाओंगा।
तातें सहज सरूप समाओंगा ॥ टेक ॥
पाँचहिं मारि पचीसहिं मारों गढ पर दीप बराओंगा॥१॥
उनमुनि धुनि मे सुरति समाओं उलटी गंग बहाओंगा॥२॥
सुखमन के घर तारी लाओं अमी अलूफा पाओंगा॥३॥
आठो पहर करों असवारी ज्ञान के खडग लगाओंगा॥४॥
तरकस तेज पवन बँद लाओं पकरि मवास ले आओंगा॥५॥
साहब रीझै नौवति बकसे निसु दिन डंक बजाओंगा॥६॥
जन गुलाल भयो दफ्तर दाखिल बहुरि न भवजल आओंगा७

॥ शब्द २० ॥

वैरागी मन कहवाँ घर तुम किया, तातें सहज सरूपी भेप लिया ॥टेक॥
कवनि जुगति तुम आसन माँडो, कवनी देखो हीया ॥१॥
गंग जमुन तट आसन माँडो, तिरवेनी तट बारो दीया ॥२॥
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी, छोड सकल जग दीया॥३॥

॥ शब्द २१ ॥

ससुरवाँ पंथ कैसे जाब हो, नैहर अति बड़ कूर ॥टेक॥
काम न जानौं गुन नहिं आवे करब कवन हम ज्ञान।
संगहिं सवतिं सोहागिन हमरी कैसे रहहि अब मान ॥१॥

*गऊ-शाला। †नौकरी।

सासु ननद घर दारुनि भइलीं पियवा नाहिं हमार।
गाँव के लोगवा लइया* लावे भसुरे† मिलली भतार॥२॥
का से कहोँ दुख कौन सुने अब निसु दिन डहत अंगार।
धन जोवन दूनोँ हम खोवल पिया नहिं अयलैं हमार ॥३॥
नेम धरम कइकै मन लावल करम वुड़ल संसार।
कहैं गुलाल अगमपुर वासी नैहर छुटल हमार ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

कहाँ जइये घर मिलल भोग, भ्रमत रहत सब फिरत लोग॥१
सहज सरोवर फुलल फूल, विनसत‡ कमल भँवर रस भूल॥२
पियत पियत जब भयो है सूर, अनुभौ बाजा बजत तूर॥३
पायो घर जग छुटल फेर, नाम खजाना मिलल ढेर ॥४॥
ऋद्धि सिद्धि मेरे कवन काज, लोक वेद की छुटलि लाज॥५
थकित भये जब पाँच पचीस, तीनोँ देव मिले जगदीस॥६
कह गुलाल मन मिलल भाव, ज्ञान लहरि गै सिंधु समाय ॥७

॥ शब्द २३ ॥

पारस नारायन को मोहिं लागे।
लोहे तैं कनक कनक तें पारस, अनुभौ गति अनुरागे ॥१
काठ तैं चंदन चंदन तैं मलयज§, मोल अमोलन लागे।
भृंग तैं कीट कीट तैं भृंग भयो, सत्य लगे जिव जागे॥२
काग तैं हंस हंस परहंसन‖, जोगी जुगत समाधे।
जीते जोग भोग सब त्यागो, जेइ नर मन को बाँधे ॥३
चढ़ि पहार निर्धार जोति मिलो, उलटि जु गयो सुभागे।
एकै ब्रह्म एक भयो साहब, कह गुलाल मन पागे ॥४॥

---

*चुगली। †जेठ। ‡सूख जाना। §खास मलयागिर का खालिस चन्दन। ‖परमहंस।

॥ शब्द २४ ॥

मनुवाँ संग लगाई झूठ मुँठ खेलहीं ॥ टेक ॥
ासु ननद धैकै अब लिहलिन्हि, दमदाहि[*] बँधलिन्हि जाई।
ोद कै बलकवा छोर अब लिहलिन्हि, बुढ़ियाचललपराई[†]॥
र लुटवौलिन्हि सहर जरौलिन्हि, केहि गोहरावौं जाई ।
वति भौजिया और जेठनिया, ठाढ़ी रहलि तवाई[‡]॥२॥
कुल कुटुम्ब सबही पिस मरलिन्हि, का अब करौं उपाई।
ठाढ़ी भइल धन सिर कर धूनै, का हम लइकै जाई॥३॥
छोड़हुं देस अनँद तब होइहै, सतगुरु लिह्यो बचाई ।
जन गुलाल काया गढ़ जीत्यो, दियो निसान बजाई॥४॥

भेष की रहनी

॥ चौपाई ॥

तूमा तीन भारती[§] बनायो ।
चौथे नीर भरि हाथ लगायो ॥ १ ॥
सुखमन सीतल पीवत नीर ।
निकसि दसौ दिसि अनँद फकीर ॥ २ ॥
कुयरी[||] करम काट ले आई ।
ज्ञान खरादे रच्यो बनाई ॥ ३ ॥
सतगुरु के घर बैठक दीन ।
मनुवाँ तहाँ रहत लौलीन ॥ ४ ॥

---

[*] दामाद कीं । [†] भागना । [‡] मुरझाई हुई । [§] भरत अर्थात मिश्रित धात का । [||] छुरी ।

तिलक तत्त दियो लीलार ।
अगम भेख बन्यो टकसार ॥ ५ ॥
एकादस तिलक दियो जित धीर ।
कहै गुलाल अलमस्त फ़कीर ॥ ६ ॥
असनवटी आसन तारी लावे ।
द्वादस बैठि गगन घर धावे ॥ ७ ॥
गगन जोति मे रहे समाई ।
कह गुलाल आवे नाहिं जाई ॥ ८ ॥
कोपिन* बाँधे मूल दुवार† ।
उलटे पवन उठे झनकार ॥ ९ ॥
अष्ट कँवल फूल्यो जब फूल ।
जन गुलाल हिंडोला झूल ॥ १० ॥
कंठी करम काटि जो डारे ।
अजपा जपे जोति तब बारे ॥ ११ ॥
सुमिरन करे बैस्नव तेई ।
कहैं गुलाल अतिथि है सेई ॥ १२ ॥
मुरछल मन फेरे चित लाई ।
अगम जोति दसहूँ दिसि छाई ॥ १३ ॥
सत्त सब्द ले मुरछल बाँधे ।
कहैं गुलाल फिरत सब धाँधे ॥ १४ ॥
पउवा‡ प्रेम पगर§ जो नावै ।
उनमुनि जाय गगन घर धावै ॥ १५ ॥

*लँगोटा । †गुदा चक्र । ‡ खड़ाऊँ । §पाँव ।

रिमझिमि बरसै मानिक मोती ।
कह गुलाल पउवा चढ़ सेती* ॥ १६ ॥
कमरबँद बाँधि अगम घर जोवै ।
उलटि सुखमना गतिहि बिलोवै ॥ १७ ॥
बजर† फाड़ बाँधे तत सार ।
कह गुलाल यह रहनि हमार ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

माला जपौं न मंतर पढ़ौं, मन मानिक को प्रेम ।
कंथ गूदरि पहिरौं नहीं, कह गुलाल मेरे नेम ॥१९॥
गुलाल ताखो‡ तत दियो, प्रेम सेल्हि हिये नाय ।
सुमिरिनी मन महँ फिरो, आठ पहर लौ लाय ॥२०॥
गूदर धागा नाम का, सूई पवन चलाय ।
मन मानिक मनि गन लग्यो, पहिर गुलाल बनाय २१
गुलाल माला नाम का, राखो गर मे नाय ।
कोटि जतन छूटे नहीं, रहो जोति लपटाय ॥२२॥

अरिल छंद

(१)

प्रान चलो असमान सहज घर जाइया ।
सुन्न सहर झकझोर सुरति ठहराइया ॥
जोग जुगत सों नेह ब्रह्म मे समाइया ।
कहै गुलाल अवधूत सत्य तव पाइया ॥

---

*सफ़ेद । †बज्र कपाट । ‡साधुवों की टोपी ।

रवि ससि दूनौं बाँधि निरंतर धावई ।
कहै गुलाल अतीथ तत्त घर छावई ॥

(११)

निर्मल रूप अपार सौं सुरति लगाइया ।
बिनु पग चालो चाल अनँदपुर जाइया ॥
देत दमामा ढोल सो जमहिं नचाइया ।
कहै गुलाल सोइ सूर सहज घर पाइया ॥

(१२)

अकबति* अलह सौं जानि सुबुका† सौं बोलना ।
हर दम हका‡ ही लाइ रफत§ नहिं डोलना ॥
पंच फिरिस्ते‖ पकरि नयन नहिं खोलना ।
कहै गुलाल सोइ साफ हिमत¶ नहिं डोलना ॥

(१३)

खुब** साहब सौं प्रीति सुरति जो लावई ।
अलह इमान सों नूर कसब†† तब पावई ॥
इलम इमान लगाइ सुबुका तब पावई ।
कहै गुलाल फकीर यार सोइ भावई ॥

(१४)

सब घट साहब बोल सत्त ठहरावई ।
निसु बासर मौजूद भिस्त‡‡ की चलावई ॥

*आकिबत=परलोक । †कोमलता । ‡सत्य । §रब्त, मिलाप । ‖दूत । ¶हिम्मत । **अच्छे । ††हुनर, गुन । ‡‡स्वर्ग ।

साफ साहब सोँ रफत पाक तब पावई ।
कहै गुलाल फकीर खूब घर छावई ॥

(१५)

ब्रह्म भयो जब पूर सूर सर* लावई ।
बाजै अनहद घंट निसान समावई ॥
भरो पदारथ नाम परखि अघ† जावई ।
कहै गुलाल प्रभु हेतु सोई नर पावई ॥

(१६)

आपु करहु नर साफ साहब सत भावई ।
निसु बासर करि प्रेम राम गुन गावई ॥
जोग जुगत सोँ नेह सो परखि समावई ।
कह गुलाल मन जीति निसान बजावई ॥

(१७)

अर्ध उर्ध को खेल कोऊ नर पावई ।
चाँद सूर को बाँधि गगन ले जावई ॥
इँगल पिँगल दोउ बाँधि सहज तब आवई ।
कह गुलाल हर रोज अनँद तब आवई ॥

(१८)

रहित भयो घर नारी तत मन धीरा ।
ब्रह्म भयो तब जीव गयो तब पीरा ॥
निसु दिनि लायो ध्यान झरत मनि हीरा ।
कहै गुलाल सोई सत अनँद फ़कीरा ॥

*तीर । †पाप, क्लेश ।

(१९)

अजर अमर पुर देस संत रन साजिया ।
मन पवना होउ साज नौबति धुनि बाजिया ॥
द्वादस चढ़ि मैदान जुद्ध तब लाइया ।
कह गुलाल मन सूरत पर चढ़ि गाजिया ॥

(२०)

राम रहे घर माहिं ताहि नहिं मानई ।
पूजहि पत्थल भीति मया मन सानई ॥
झूठ रहत हरि हाल करम बहु ठानई ।
कहै गुलाल जड़ भूल आपु नाहिं मानई ॥

(२१)

सुन्न सहर आजूब* सहज धुनि लागई ।
इँगल पिँगल को खेल अमी तब पागई ॥
पुलकि पुलकि करि प्रेम अनंद छबि छाजई ।
कह गुलाल कोइ संत ताहि पंथ लागई ।

(२२)

इसिक अली† सौं साफ अदल सोइ पाइया ।
रोज रहै मुसताक सकूनत‡ आइया ॥
क्योंकर बूझै आपु सभै नर रोइया ।
कहै गुलाल फकीर सत्त जिन जोइया§ ॥

(२३)

तीरथ दान को आस अंध नर धावई ।
राम न चीन्हल साँच सो जन्म गँवावई ॥

*अचरजी । †मालिक । ‡ठिकाना । §खोज लिया ।

तिरगुन गुन महँ डोलत सबै नचावई। -
कह गुलाल नर भरमि भरमि जहँडावई* ॥

(२४)

झिलिमिलि झलकत नूर नैन पर नूरा।
हर दम होत अघोर बजत तहँ तूरा ॥
रवि ससि दूनौं संग रखत पूजत पूरा।
कह गुलाल आनँद गति बोलत सूरा ॥

(२५)

निर्मल हरि को नाम ताहि नहिं मानहीं।
भर्मत फिरैं सब ठावें कपट मन ठानहीं ॥
सूझत नाहीं अंध ढूँढ़त जग सानहीं† ।
कह गुलाल नर मूढ साँच नहिं जानहीं ॥

(२६)

माया मोह के साथ सदा नर सोइया।
आखिर खाक निदान सत्त नहिं जोइया ॥
बिना नाम नहिं मुक्ति अंध सब खोइया।
कह गुलाल सत, लोग गाफिल सब रोइया ॥

(२७)

दुनिया बिच हैरान जात नर धावई।
चीन्हत नाहीं नाम भरम मन लावई ॥
सब दोषन लिये संग सो करम सतावई।
कह गुलाल अवधूत दगा‡ सब खावई ॥

*ठगाते हैं। †घमंड में। ‡धोखा।

(२८)

साहब दायम* प्रगट ताहि नहिं मानई ।
हर दम करहि कुकर्म भर्म मन ठानई ॥
झूठ करहि व्योहार सत्त नहि जानई ।
कह गुलाल नर मूढ़ हक्क नहिं मानई ॥

(२९)

याही कहन, हमारि जो कोउ मानई ।
तातेँ सदा हजूर सही† जौ ठानई ॥
रहै सदा निरसंक काल नहिं जानई ।
कहै गुलाल फकीर माया नहि मानई ॥

(३०)

गर्व भुले नर आय सुभ्कत नहि साँइया ।
बहुत करत संताप राम नहि गाइया ॥
पूजहिं पत्थल पानि जन्म उन खोइया ।
कह गुलाल नर मूढ़ सभे मिलि रोइया ॥

(३१)

सुंदर साहब मानि के नेह लगावई ।
अर्ध उर्ध को खेल उलटि के धावई ॥
तिरगुन तेल बराय सो जोति जगावई ।
कह गुलाल सत लोक तुरत नर पावई ॥

(३२)

भजन करो जिय जानि के प्रेम लगाइया ।
हर दम हरि सों प्रीति सिदक तब पाइया ॥

*सदा । †सत्य ।

बहुतक लोग हेवान सुकृत नहिं साँइया ।
कह गुलाल सठ लोग जन्म जहँड़ाइया ॥

(३३)

एक करो नर साँच ताहि गुन गाइया ।
आठ पहर लव लाइ अनत नहिं जाइया ॥
लोक बेद की फाँसी तबहिं कटाइया ।
कह गुलाल हरि हेत का तुम बौराइया ॥

(३४)

राम भजहु लव लाइ प्रेम पद पाइया ।
सफल मनोरथ होय सत्त गुन गाइया ॥
सत साध सौं नेह न काहु सताइया ।
कह गुलाल हरि नाम तबहिं नर पाइया ॥

(३५)

झूँठि लगन नर ख्याल सबै कोइ धाइया ।
हर दम माया सौं रीति सत्त नहि आइया ॥
बहत फिरत हर रोज काल धरि खाइया ।
कह गुलाल नर अध धोख लपटाइया ॥

(३६)

ऐसा बचन हमार सत्त जो मानिया ।
चेत करहु नर आपु वृथा सब जानिया ॥
लोभ लहरि संयूह* ताहि सँग सानिया ।
कह गुलाल नर अंध धुंध मन आनिया ॥

*झुंड ।

(३७)

रवि ससि दूनौं बाँधि के सुरति लगाइया ।
अजपा जपै सुजाप सोहं डोरि लाइया ॥
लगन लगो निरंकार सुरति सँग पाइया ।
कहै गुलाल अतीथ सत्त गुन गाइया ॥

(३८)

यह संसार सयान आपु नहि जानई ।
तुरत होत बिज्ञान खबरि नहिं मानई ॥
लोभ भरो हर रोज राम नहिं जानई ।
कहै गुलाल जम हाथे सबै बिकानई ॥

(३९)

सीतल साहब नाम पियत नहिं कोई ।
निसु दिन माया सों हेतु पलक महँ रोई ॥
दिन दिन गाफिल होइ काहु नहिं जोई ।
कह गुलाल हरि हेतु गाफिल नर सोई ॥

(४०)

सुखमन सुंदर राज करत नहिं मानी ।
भटकत फिरै संसार साँच नहिं आनी ॥
मरि मरि रह हर हाल झूठ सँग सानी ।
कह गुलाल तत ज्ञान आपु पहिचानी ॥

(४१)

उदित भयो जब ज्ञान कर्म मन नासई ।
भरो पदारथ नाम अचल पद पावई ॥

दिन दिन पूरन सोइ संत महँ भावई ।
कह गुलाल हरि हेतु कोई नर पावई ॥

(४२)

दोजख दुनिया भोग सबै नर सोइया ।
पाँच पचीस के फेर फिरत मति खोइया ॥
भटकि मरत संसार राम नहिं जोइया ।
कहै गुलाल सत्त बिन सब नर रोइया ॥

(४३)

आसिक इस्क लगाय साहब सों रीझई ।
हरदम रहि मुस्ताक प्रेम रस पीजई ॥
बिमल बिमल गुन गाय सहज रस भीजई ।
कह गुलाल सोइ यार सुरति सों जीवई ॥

(४४)

जगर मगर* को खेल कोऊ नर पावई ।
लोक बेद को फेर जो सबै नचावई ॥
रूह जगै हर हाल तत्त सोइ पावई ।
कह गुलाल ब्रह्म ज्ञान कोऊ दरसावई ॥

(४५)

जालिम जबर संसार बचन नहिं मानिया ।
बहुत करतु है ज्ञान आपु नहिं जानिया ॥
तिरगुन गुन को संगम ज्ञान नसानिया ।
कह गुलाल नर अंध नेकु नहिं मानिया ॥

*जगमग ।

(४६)

आपु न चीन्हहि आपु सबै जहँड़ाइया ।
काम क्रोध को संगम सबै भुलाइया ॥
रटत फिरै दिन रैन थीर नहिं आइया ।
कह गुलाल हरि हेतु काहे नहिं गाइया ॥

(४७)

खोलि देखु नर आँख अंध का सोइया ।
दिन दिन होतु है छीन अंत फिर रोइया ॥
इस्क करहु हरि नाम कर्म सब खोइया ।
कह गुलाल नर सत्त पाक सब होइया ॥

(४८)

मन पवना को संगम कोइ नर पाइया ।
अनहद बजै अपार तो अलख लखाइया ॥
अनुभव फरत है ज्ञान सुरति ठहराइया ।
कह गुलाल सोइ सत निसान बजाइया ॥

(४९)

अष्ट कँवल दल फूल भँवर रस पाइया ।
सुखमन झरत है अमी तो स्वाद से खाइया ॥
नूर तजल्ली* बीच सुरति ठहराइया ।
कह गुलाल मन पाक अगम घर छाइया ॥

*प्रकाश ।

(५०)

तिरबेनी का तीर नूर झरि लागई ।
इँगल पिंगल को खेल सुन्न चढ़ि गाजई ॥
हर दम मन रहो लीन सुरति रस पागई ।
कह गुलाल ब्रह्म हेतु सत्त तब जागई ॥

(५१)

जालिम मन को बाँधि के सहज नचावई ।
पाँच पचीस को रफत* नूर कस पावई ॥
उलटि सुखमना देस अचल घर छावई ।
कह गुलाल हर रोज मान तब भावई ॥

॥ ५२ ॥

साँच काहु नर आपु अवर मति धाइया ।
सतगुरु बचन विचारि ताहि ठहराइया ॥
गंग जमुन के बीच फूल इक पाइया ।
कह गुलाल सत साजि के उर्ध समाइया ॥

(५३)

आइ बनी मेरि बाजी राम सौं लाइया ।
आठ पहर को खेल सो सुरति लगाइया ॥
मन पवना दोउ दाँव सहज तब लाइया ।
कह गुलाल सोइ सत राम गुन गाइया ॥

(५४)

अलह हमारी जाति साफियत† आवई ।
खैर खुदाय सौं रफत* अमन‡ सोइ पावई ॥

*रब्त, मेल । † निर्मलता । ‡शांति ।

कहा भयो दर हाल* पाक न लखावई ।
कह गुलाल हर रोज साफियत आवई ॥

(५५)

किसिम† कर्म को धर्म सबै नर धावई ।
भटकि मुआ ससार कसब नहिं आवई ॥
जोग जुगत नहिं नेह गाफिल गॅवावई ।
कह गुलाल हर रोज कहा जहँड़ावई ॥

(५६)

इसिक करहु नर ताहि जाहि मन लाइया ।
हर दम पाक प्रबीन सो ताहि समाइया ॥
बहुरि नहीं अवतार न कर्म सताइया ।
कह गुलाल प्रभु हेतु सोई नर पाइया ॥

(५७)

पूरन ब्रह्म निहारि के सुरति लगावई ।
अजपा जपै हर हाल जुगत मन लावई ॥
घटत बढ़त नहि कबहिं परम पद पावई ।
कह गुलाल मन जीति निसान बजावई ॥

(५८)

इसिम‡ अलिफ§ लगाइ नूर ठहराइया ।
पाँच पचीस को बाँधि उलटि के धाइया ॥
हर दम प्रभु सों नेह कहू नहिं जाइया ।
कह गुलाल अतीथ ज्ञान तिन पाइया ॥

*अभी । †तरह तरह के । ‡नाम । §सीधा ।

(५९)

ज्ञान करो मन बाँधि के लगन लगाइया ।
निरखि रहो तहँ नाम तत्त ठहराइया ॥
जुग जुग अचल अपार परम पद पाइया ।
कह गुलाल सम दृष्टि तबहि नर आइया ॥

(६०)

केवल प्रभु को जानि के इलिम लखाइया ।
पार होइ तब जीव काल नहिँ खाइया ॥
नेम करहु नर आप दोजख नहिँ धाइया ।
कह गुलाल मन पाक तबहि नर पाइया ॥

(६१)

भ्रम भूलो नर ज्ञान राम नहिँ जानिया ।
बहुत करतु है ज्ञान साँच नहि मानिया ॥
झूठ दसा ब्योहार कपट बहु ठानिया ।
कह गुलाल नर मूढ़ सबै गति हानिया ॥

(६२)

अष्ट कँवल फुलाइ निरंतर धावई ।
सुखमन सेज बिछाइ के मन पवढ़ावई* ॥
जोग जुगत सोँ नेह अनँद तब आवई ।
कहै गुलाल फकीर नाम तब पावई ॥

(६३)

यह संसार अयाना† आपु नहिँ जानई ।
तुरत होय विज्ञान खबरि नहिँ आनई ॥

*सुलाना । †नादान ।

पाँच तीन पचीस त्यागो चौथ पद पर जाय ।
तहँ उठत लहरि अनंत बानी सखी देत झुलाय ॥ २ ॥
चाँद सूरज खंभ गाड़ो सुरति डोरि लगाय ।
मूल चक्र बिचारि बाँधो सुन्न नग्र समाय ॥ ३ ॥
प्रेम पटरी बैठि के झूलो गगन में आय ।
हारि हारि मन हारि बैठो अवर कहिं नहिं जाय ॥४॥
तहँ ज्ञान ध्यान न नेम पूजा अगम घर ठहराय ।
तहँ उठत जोति जे प्रेम भरि भरि लपट चहु दिसि धाय॥
काम क्रोध जे मोह त्यागो जीव रहो समाय ।
संत सभा मे जाय बैठो बहुरि इतहि न आय ॥ ६ ॥
दसौ दिसि मे फूल फूलो जोति जगमग पाय ।
सत्त रूप सरूप सोभा मो पै बरनि न जाय ॥ ७ ॥
प्रेम प्रीति सौं रीति करिकै रहो चरन समाय ।
कह गुलाल जो सरन आयो छोड़ि सबै बलाय ॥ ८ ॥

(२)

हिंडोला झूलत गुरुमुख आज ॥ टेक ॥

चँद सूरज खंभ रोप्यो सुरति डोरि लगाय ।
मंद मंद जो पवढ़* गगनहि रह्यो जाय समाय ॥ १ ॥
तहँ होत अनहद नाद धुनि सुनि सहज चित्त लगाय ।
बिगसि कँवल अनंत सोभा भँवर रहे लोभाय ॥ २ ॥
अरध उरध उलटि चाल्यो सुखमना ठहराय ।
गंग जमुना सरसुती मिलि पदुम दरसन पाय ॥ ३ ॥

*झूलना ।

सुन्न सिखर समाधि बैठ्यो जोग जुगत उपाय।
डारि तन मन चढ़्यो सिर दै जोति लहरि नहाय ॥४॥
अति अथाह अपार देख्यो नैन नाहि समाय।
पाँचो पचीसो तीनि त्याग्यो बानि निर्गुन गाय ॥ ५ ॥
आदि अंत अरु मध्य त्याग्यो अगम गति जो आय।
चौथे पद पर बैठ जोगी मौज ढोल बजाय ॥ ६ ॥
जग्यो प्रेम जो नेम चरनन साध संगति पाय।
त्यागि कर्म संताप तन को पाप दियो बहाय ॥७॥
मारि ममता मन बिचार्यो हंस रूप कहाय।
कह गुलाल फकीर पूरा जो यह रहनि में आय ॥८॥

(३)

सब्द कै परल हिंडोलवा हो झूलब ताहि अधार।
झुलत झुलत सुख उपजै हो उठै सहज झनकार ॥१॥
हिंडोलवा गुरुमुख झूलब झुलत झुलत जाइ पार।
गावहिं पाँच सोहागिनि हो छूटल झुलब हमार ॥२॥
आनँद कै झुलब हिंडोलवा हो तिहुँ पुर मंगलचार।
पिय के सँग हम झूलब हो निस्चै प्रिय करतार ॥ ३ ॥
निरखत निरख न आवै हो बरनत बरनि न जाय।
जो यहि झुलहिं हिंडोलवा हो चरनन चित लाय ॥४॥
कह गुलाल हम झूलब हो सतगुरु के परताप।
चरन कमल मन रातल हो तहवाँ पुन्न न पाप ॥५॥

(४)

निर्गुन झुलब हिंडोलवा हो, सत्त सब्द लगि डोर।
सिवसक्ती मिलि झूलहि हो, झुलब झकोरि झकोरि ॥१॥

मूल मे खँभवा गड़ावल हो, पौढ़्यो दस द्वार।
मन मानिक बरै तहवाँ हो, भीतर बाहर उँजियार ॥२॥
सुखमन राग भरावहिं हो, सहज उठै झनकार।
धुनि सुनि हंसा रातल हो, बिगसि कमल कचनार ॥३॥
मिटलि कामना मन कै हो, तब छूटल संसार।
अचल अमर घर पावल हो, फिर नहिं औतार ॥४॥
संतन मिलि तहँ झूलहिं हो, अपनी अपनी बार।
कह गुलाल हम झूलब हो, क्या झूलहि संसार ॥ ५ ॥

(५)

सत्त सब्द इक पुरुष हो, सुरति निरति लगि डोरि।
मन मौज करि बैसब* हो, झुलब बहोरि बहोरि ॥ १ ॥
गावहु सखिया सहेलरि हो, आनँद मँगलचार।
चकवा सब्द सुनि व्याकुल हो, झरत है अधर अधार ॥२॥
छेक्यो नगर नौद्वरिया हो, पाँच पचीस घर मारि।
तीन देव लै बाँधल हो, अब के करिहै गोहारि ॥ ३ ॥
जीति कायापुर जोगी हो, जम कर नाता तोरि।
जन गुलाल सत बोलहि हो, घर आयल मन मोर ॥४॥

(६)

हिंडोला अगम झूल झुलाय, झुलत अगमहि पाय॥टेक॥
सुन्न सहर में फूल फूल्यो, अनँद मगल गाय।
चित्त चचल पगो चरनन, अनत कहि नहिं जाय ॥ १ ॥
नाम लज्जत† पुलकि लेवे, सोक मोह नसाय।
झुलत झूलत मन बिरागी, ज्ञान घूँघट नाय‡ ॥ २ ॥

*बैठेंगे। †स्वाद। ‡झाकना।

झुलो जो सहजहि हिंडोलना, विनु झुले झूल झुलाय।
तगर मगर हिंडोलना, झन झनक झनकत जाय ॥ ३ ॥
वरन सरन विलोकि झूले, प्रीति सौं लपटाय।
अब कि बेर विचारि झूले, मूल मंत्र जो पाय ॥ ४ ॥
अचल अगम हिंडोलना, झूलो जो तत्त लगाय।
सतगुरु सब्द अपार दीन्हो, ब्रह्म भेद लखाय ॥ ५ ॥
झुलत झूलत प्रान पति भो, मौज झूल झुलाय।
झुलै कोई सत पूरा, आपु खेल बनाय ॥ ६ ॥
अनंत कला हिंडोलना, अब थको झूलि न जाय।
आवा गवन न होय कबहीं, तहाँ जाइ समाय ॥ ७ ॥
कह गुलाल हिंडोलना, झूलो जो रूप बनाय।
नाम रँग जो रंग लागो, डंक* देत बजाय ॥ ८ ॥

(७)

हिंडोला झूलहु रामे राम ॥ टेक ॥

ध्यान धरु गुरु चरन गहिके, नाम लज्जत आय।
काम क्रोध को पकरि बाँधो, त्रिबिधि ताप बहाय ॥१॥
झूलै जो यह ज्ञान हिंडोलना, सत्त सब्द समाय।
अगम नीगम झूलहीं मिलि† अनहद डंक बजाय ॥ २ ॥
जोति परचे बरै तहवाँ, सहज खेल बनाय।
सिव सक्ती सौं नेह लागो, सुख हिंडोलना पाय ॥ ३ ॥
अचल अस्थिर भयो जुग जुग, चित कहीं नहिं जाय।
झूलै कलोल हिंडोलना, सतसंग सग लगाय ॥ ४ ॥

*डका। †प्रचंड।

आवा गवन न होय कबहीं, अचल घर पर जाय।
झूलै जो सुखद हिंडोलना, मनसूब सूबा पाय ॥ ५ ॥
नाम पटरी बैठि कै, पोढो अगम मे जाय।
सुखमन सुक्ख हिंडोलना, झुलत पार झुलाय ॥ ६ ॥
हद्द छोड़ बेहद्द बैठो, ब्रह्म ब्रह्महिं जाय।
लोक लज्जा दूरि डारो, आपु आपु समाय ॥ ७ ॥
जाति पाँति न कर्म तहवाँ, एक ब्रह्महि पाय।
कह गुलाल हिंडोलना, झूलो जो मंगल गाय ॥ ८ ॥

(८)

हिंडोलना कर्म झुलावनहार ॥ टेक ॥
पाँच तीन पचीस धावहिं, नेकु नहि ठहराय।
पाप पुन्न को बीज लैके, बोवहिं खेत बनाय ॥ १ ॥
जन्म उत्तम पाय के रे, माया परल भुलाय।
राम नाम न जानु भोंदू, चल्यो मूल गँवाय ॥ २ ॥
भूमि पानि अकास झूलहि, झुलहिं सूर फनिंद*।
ब्रह्मा बिस्नु महेस झूलहि, झुलहि मारुत† चंद ॥ ३ ॥
तैंतीस कोटि जो देव झूलहिं, मोह में लपटाय।
वज्र बाँध को बाँध बाँध्यो, सबै बाँधि नचाय ॥ ४ ॥
जोगी जती जो सिद्ध झूलहिं, भेख रच्यो बनाय।
झूलहिं जो नारद आदि मुनिवर, पार काहु न पाय ॥५॥

*शेषनाग। †पवन, हवा।

सावित्रि लछमी गौरि झूलहिं, दसहु दिस मे छाय ।
हंस विषमा गरुड झूलहि थीर कवहुं न आय ॥ ६ ॥
अरध ऊरध मध्य धारा झुलो त्रिकुटी जाय ।
गगन मद्धे सुरति मॉडो जोति देहु जगाय ॥ ७ ॥
झुला झूलि न जाय प्रभुजी अव न मोहि झुलाय ।
जन गुलाल सो सरन आयो राखु चरन लगाय ॥ ८ ॥

(९)

तत्त हिंडोलवा सतगुरु नावल तहवाँ मनुवा
झुलत हमार ॥ टेक ॥
विनु डोरी विनु खंभे पवढ़ल, आठ पहर झनकार ॥१॥
गावहु सखियाँ हिंडोलवा हो, अनुभौ मंगलचार ॥२॥
अव नहिं अवना जवना हो प्रेम पदारथ भइल निनार ॥३॥
छुटल जगत कर झुलना हो, दास गुलाल मिलो है यार ॥४॥

(१०)

प्रेम प्रीति रत झूलव हो, सुरति कै डोर लगाय ।
प्रेम प्रीति मन रावल हो, हमरी मरल भताय* ॥ १ ॥
पाँस पचीस तिन† वाँधल हो, सखियाँ संग लगाय ।
हम धनि पिय कि सोहागिनि हो, मरिहै हमरि वलाय ॥२॥
अधर महल पर झूलव हो, फूलल कँवल हमार ।
सत्त सब्द गुन गावल हो, कस्यो मंगलचार ॥ ३ ॥
झूलव निर्गुन हिंडोलवा हो, जग से नाता तोरि ।
कह गुलाल हम झूलव हो, पिय संग दै गठिजोरि ॥४॥

*पति यानी मन । †तीन ।

बारह मासा

(१)

बारह मासा जो ठहराई, जन्म सुफल तब जानो भाई ॥१॥

॥ असाढ ॥

मास असाढ जो आइया, सब जिय आसा लाय ।
प्रभु चरनन चित लागेऊ, इत उत नाहिन जाय ॥ २ ॥

छंद

पुरवा जो पवन झकोर ऊठि, बादर चहूं दिस धाइया ।
गरजि गगन अनंत धुनि छबि, नाम सौं लपटाइया ॥३॥
लपटाइ रहु रे नाम सोँ, आनंद कहि नहिं जाइया ।
प्रेम प्रापत भयो तबहीं, आपु आपु बनाइया ॥ ४ ॥

॥ सावन ॥

सावन स्वास न मानई, गहि गहि रोकत जाय ।
पिय कै उदेस* न पायो, कैसे क जिय ठहराय ॥ ५ ॥

छंद

सुन्न में झनकार झन झन, मोति हूं झरि लाइया ।
धनि भाग विरहिन तासु जीवन, जासु प्रभु गृह आइया ॥६॥
जासु प्रभु गृह आइया, तब अनंद मंगल गाइया ।
उठत निर्मल बानि निर्गुन, अभय डंक बजाइया ॥ ७ ॥

*सदेस, ख़बर ।

॥ भादों ॥

भादौं भरम नसावई, ज्ञान कै सूरति लाय ।
चहुं दिसि दमकै दामिनी, चित चक्रित ह्वै जाय ॥८॥

छंद

सुखमन सेज सँवारि बहु विधि, अगम रंग लगाइया ।
प्रेम सौं पवढ़ाइ प्रभु को, भाव अंकम* लाइया ॥९॥
भाव अंकम लाइया, तब कर्म सब जरि जाइया ।
अकल कला को खेल बनिया, अनंत रूप दिखाइया ॥१०॥

॥क्वार॥

क्वार पूरन करमना, समय सोहावन भाय† ।
कहि जल थाह अथाह है, निर्मल बरनि न जाय ॥११॥

छंद

ब्रह्म पूर प्रकास चहुं दिसि, उदित चंद सोहाइया ।
एक नाम सौं रंग लागो, मगन माधो‡ भाइया ॥ १२ ॥
तत्त मद्धे तत्त मेरयो§ आवागवन नसाइया ।
मृग तृसना को नीर जैसे, भटकि भटकि लजाइया ॥१३॥

॥ कातिक ॥

कातिक कर्म प्रापति भयो, जो जा को जस भाय ।
अपनो अपनो अस जस, सो तस बीज मेराय ॥१४॥

छंद

यहि दिवस दस रँग कुसुम है, पुनि अंत ना ठहराइया ।
नहि प्रीति प्रानी करत प्रभु सौं, सिर धुने पछताइया ॥१५॥

*अंक में, गोद में । †भाना, पसंद आना । ‡मन । §मिलाया ।

सिर धुने पछताइया, तब हृदय ज्ञान भुलाइया।
मरकट मुठी धारै भरम ज्यों, आपु आपु बँधाइया ॥१६॥

॥ अगहन ॥

अगहन मास सोभित भयो, जीव जंतु सुख पाय।
ऐसो जगत जहान जड़, घर दारा लपटाय ॥१७॥

छंद

तू चेत करु नर बावरे, आया कहाँ कहँ जाइया।
यह काल कठिन कराल है, धरि साम भेरे खाइया ॥१८॥
साम भेरे खाइया धरि, तबहि सुद्धि भुलाइया।
मृग तृसना को नीर जैसे, भरमि भटकि लजाइया ॥१९॥

॥ पूस ॥

पूस मास तुसार† आयो, कांपि जाड़ जनाइया।
घर नाम साथ समीप‡ नाहीं, पाल§ बहुत सताइया॥२०॥

छंद

ज्ञान अगिन उदगारि तापो, कर्म सबहिं जराइया।
इक जानि प्रभु को नाम लेवे, जाड़ निकट न आइया ॥२१॥
जाड़ निकट न आइया, तब [illegible] जिय भाइया।
मनहिं मन मे विचार आये [illegible]

छंद

माया मोह समूह सागर, डुबत थाह न आइया ।
हरि चेत नाहिं विचेत प्रानी, भरम गोता खाइया ॥२४॥
भरम गोता खाइया जब, तबहिं मती हेराइया ।
भयो विहवल जबहिं प्रानी, सोक मोह लगाइया ॥२५॥

॥ फागुन ॥

फागुन फूल हुलास, न आनंद भावई ।
घर घर गावहि लोग, तिरास जनावई ॥ २६ ॥

छंद

प्रान-पति बिनु कैसे जीवों, ऐसो होरी जाइया ।
इक नाम सों नाहि संग बनिया, वृथा सम्मत* लाइया॥२७॥
वृथा सम्मत लाइया, तब ऐसही दिन जाइया ।
अब कहा पछतात हो, तुम कहै कवन बुझाइया ॥२८॥

॥ चैत ॥

चैत मे बनराय फूलो, सुभग सोभा छाइया ।
ऊँच नीच सब उद्ध पूरन, जा को जैसो आइया २९

छंद

त्रिगुन ताप संताप है नर, चेत काहे न लाइया ।
जिन जुक्ति जल तें तन सँवार्‍यो, ताहि क्यों बिसराइया॥३०
ताहि क्यों बिसराइया नर, आस लै लै धाइया ।
भूलि गे सब बात तबकी, कर्म भाखी खाइया ॥३१॥

*सन ।

॥ वैसाख ॥

वैसाख कर्म विचार विनु, नर झूठि तौल जोखाइया*।
वृथा माया मन भुलाया, धूर में लपटाइया ॥३२॥

छंद

जंजाल जाल को फाँद फाँद्यो, कठिन बाँध बँधाइया।
बँध-छोर बंधन होय तब, जब नाथ करहिं सहाइया ॥३३॥
नाथ करहिं सहाइया, तब मैल सबहिं बहाइया।
छबि कोटि चंद उदय कियो है, रूप बरनि न जाइया॥३४

॥ जेठ ॥

जेठ दाया ज्ञान रूपी, संत मन ठहराइया।
जिन अगम निगम विचार कीन्हो, तत्त ब्रह्म समाइया॥३५

छंद

कह गुलाल अपार स्वामी, गुरु कृपा घर आइया।
धन भाग जीवन भक्त को, जिन परम पद यह पाइया३६
परम पद यह पाइया, तब सहज घर ठहराइया।
भयो अविचल अभय ज्ञानी, समुँद लहरि समाइया॥३७

बसंत

(१)

आनँद बसंत मन करु धमारि। मगन भई तहँ पाँच नारि॥ टेक॥

---

*वज़न कराया।

सब्द सोहावन ऋतु वसंत। हरि को नाम लिये खेलत संत॥१॥
दसौ दिसा में फूले फूल। ऋतु वसंत को इहै मूल॥२॥
अष्ट जाम तहँ उठै गुँजार। रुनझुन बाजै भव के पार॥३॥
आवै न जाय है रहत थीर। खेलत कोउ प्रभु फकीर॥४॥
लोक वेद कै छुटलि आस। साध सँगति महँ लियो वास॥ ५॥
कहगुलाल यह जाने कोय। आवा गवन न कबहिँ होय॥६॥

(२)

सुलभ बसंत नर नाम जान। यहि सिवाय मत झूठ आन॥१॥
कोउ जल किरिया करे तन सताय। कोउ नेती धोती प्रीति लाय॥ २॥
कोउ बैठि गुफा में धरत ध्यान। कोउ भूलि भटकि पूजत पषान॥ ३॥
कोउ कर्म धर्म करे विधि विधान। कोउ सुरभि* सहस दे विप्र दान॥ ४॥
कोउ तीरथ ब्रत में जाइ न्हाय। कारन आसा जन्म जाय॥५॥
कोउ नागा दूधा-धारि होय। वन खँड बसि गृह क्यों न जोय†॥ ६॥
कोउ जंत्र मंत्र करि जग भुलाय। कोउ मन महँ माया हेतु लाय॥ ७॥
यहि सिवाय जो जाने आन। जम सिर मारै दै निसान॥८॥
कह गुलाल यह हरित ज्ञान। राम नाम सो सत्त जान॥९॥

*गाय। †ढूँढना।

(३)

उपजै वसंत हरि भजन ज्ञान। पुलकि पुलकि मन ऋतु समान ॥ १ ॥
गुरु के वचन जव कली लाग। प्रेम पदारथ फूल्यो भाग ॥२॥
चित चेरा ह्वै करु हुलास। वैठु निरंतर अगम वास ॥३॥
दसौ दिसा मे उठै सोर। पंच सखि गावैं अति झकोर ॥४॥
गगन मँडल में लागु रंग। खेलत हुलसत प्रभु के सँग ॥५॥
यह सुख प्रापत जेकरे* होय। कारन तेहि कछु रहै न कोय॥६॥
कह गुलाल यह जाने जोय। ता का आवागवन न होय ॥७॥

(४)

खेलत वसंत मन मगन मोर। उमँगि उमँगि चित प्रभु की ओर ॥ १ ॥
आतम फूल्यो भयो भोर। ऋतु वसंत मिलो मनुवाँ चोर ॥२॥
तिहुं पुर मद्धे भयो सोर। दसौ दिसा हरि हरि हिलोर ॥३॥
विमल विमल गावैं सुर राग। ऊठत वानी गति अनुराग ॥ ४ ॥
आनँद मंगल मोर न तोर। विगसि श्रैन छवि नैन कोर ॥५॥
धन्य भाग अस मिले वसत। आपहि अपने खेलत संत ॥६॥
कह गुलाल नहिं भाग थोर। प्रान पिया सँग मिलल जोर॥७

(५)

चेतहु क्यों नहिं नर हरि वसंत। दिन दस वीते काल अंत ॥ १ ॥

*जिसको।

गावत धूपत मन को फेर। करत कुमति नहिं सुमति हेर ॥२॥
ठौर ठौर फिरते दिन जाय। भटकि भटकि भ्रम गोता खाय ॥ ३ ॥
ऐसे समय न पैहौ दाव। छोडो सब कछु लोक चाव ॥४॥
माया ठगनी ठगो ठगाय। मृग तृसना लालच लोभाय ॥५॥
साध सँगति निज इहै भेव। त्यागहु सबै जगत के देव ॥६॥
कह गुलाल यह गति बुझाय। फिर पछितैहो काल खाय ॥७॥

(६)

परसत बसंत मन मगन मोर। फूल्यो काया भयो भोर ॥१॥
दुनिया नेम धर्म करै आस। तजत नाम करि करम बास ॥ २ ॥
दुख सुख मरन जिवन है पास। घटत बढत चौरासि बास ॥ ३ ॥
ऐसे समय बहुरि न दाव। दीन होत काके पछिताव ॥४॥
साध सँगति नहि करत भाव। जन्म जात जस लोह ताव॥५॥
आपु न चीन्हत फिरत अज्ञान। जम सिर मारहिं अत समान* ॥ ६ ॥
कह गुलाल का करौं बयान। जग नहि मानत बड़ नदान ॥ ७ ॥

(७)

भल मन राजा खेलै बसंत। उठत सब्द हरि हरि अनत ॥१॥
खेलै नारद औ सुकदेव। नवो जोगेस्वर जानि भेव ॥२॥

*समय।

प्रहलाद ध्रू खेले राखि कानि। अँबरिक खेले चक्र मानि ॥३॥
नामदेव खेले लइ करार। कबीर खेले उतरि पार ॥४॥
नानक खेले जुक्ति जानि। पीपा खेले भक्ति मानि ॥५॥
रयदास खेले डंक देइ। खेले मलूका अगम लेइ ॥६॥
चत्रुभुज खेले कर्म धोय। तुलसी खेले सगुन जोय ॥७॥
यारी खेले सहज भाव। सतगुरु बुल्ला टरे न पाँव ॥८॥
सब संतन के चरन लाग। खेल गुलाल मेरो फस्यो भाग ॥९॥

(८)

मैं उपमा कवनि करौं गुरु राय। उठत सब्द रह्यो गगन छाय१
लहरि लहरि अति उठि झकोर। निरखि निरखि चित चन्द्र चकोर ॥२॥
निरझरि झरत रहत अकास। हंस सरोवर लेत बास ॥३॥
अगम अगोचर अति अथाह। वार पार नहिं ठौर राह ॥४॥
जो जावै सो रहत थीर। नाम बसंत खेलत फकीर ॥५॥
यहि सिवाय जो जानै आन। जम सिर मारत दे निसान ॥६॥
कह गुलाल यह उत्तम ज्ञान। नाम भजन सो सत्त जान ॥७॥

(९)

आयो बसंत मन चकित मोर। ठौरठौर अति उठै झकोर ॥१॥
नाम कली जब लग्यो गात। झर्‌यो करम तब गिर्‌यो पात ॥२॥
गुरु के बचन जब फूल्यो फूल। फूल्यो फूल भँवर रस भूल ॥३॥
आदि अंत मध एक सूर*। दसो दिसा मे बजत तूर ॥४॥
यह बसंत जो जाने कोय। आवा गवन कबहिं न होय ॥५॥

---

*सुर।

संत सभा महँ बैठु जाय। सहज सुरति धरि काल* खाय॥६॥
कह गुलाल मन भयो थीर। सोई फाजिल है फकीर॥७॥

(१०)

मेरे ऋतु बसंत घर समय लागु। बाजत अनहद फाग जागु ॥टेक॥
मन राजा तहँ रच्यो रंग। पाँच पचीस तिन† लिये संग ॥१॥
खेलत खेल बहु बिधि बनाय। आनँद मंगल उठि बधाय ॥२॥
राम नाम सोँ बन्यो रीति। आठ पहर नहिँ टरत प्रीति ॥३॥
सुख सागर मे बैठो जाय। निरखि निरखि गति रहो समाय
अगम अगोचर अलख राय। सिव ब्रह्मा जा को खोज न पाय ॥५॥
कह गुलाल सो दिखे हजूर। को मानै यह बचन कूर‡॥६॥

(११)

जग्यो बसंत जा के उदित ज्ञान।
अवर सबै नर है हैवान§ ॥ टेक ॥
काम क्रोध दोउ संग जोर।
करि अँधियार न होत भोर ॥ १ ॥
टकटोरत दिन रैन जाय।
मोह महाबन पस्यो भुलाय ॥ २ ॥
माया परबल महत जान।
लोक बेद सब करत ध्यान ॥३॥

*काल को। †तीन। ‡सच। §पशु।

काल अगिनि नित ग्रसत जाय।
छतिया छूतिनि घरत खाय ॥४॥
नाम न जानहु सत्त ज्ञान।
जातेँ छूटे जग को तान ॥५॥
कह गुलाल यह वचन भाय।
फिर पछितैहौ जन्म जाय ॥६॥

(१२)

खेलत बसंत भयो अचल रंग।
ताल मृदँग डफ उठि तरंग ॥१॥
काया नगरी मन बिस्राम।
उलटि गयो तहँ एक नाम ॥२॥
आदि अंत नहि मध्य तीर।
भरत अधर तहँ भरत नीर ॥३॥
बिगसि कमल भयो उदय भोर।
थकित भयो मन गयो जोर ॥४॥
पाँच पचीस तिन* बाँधि मारि।
आनँद मंगल करु धमारि ॥५॥
धन्य भाग जाके बरत जोति।
हंस रूप है चुँगत मोति ॥६॥
कह गुलाल मोरी पुजलि आस।
चरन कमल महँ लियो बास॥७॥

*तीन।

(१३)

खेलत बसंत आनँद धमारि ।
सिव ब्रह्मा जहँ मिल मुरारि* ॥१॥
उठत तरँग तहँ बरत जोत ।
बिमल बिमल धुन बानी होत ॥२॥
तन मन डारि कै रहो समाइ ।
गंग जमुन मिलि सिखर† पाइ ॥३॥
फिरत फिरत तहँ करत कोड़‡ ।
बैठो भवन महँ थकित गोड़§ ॥४॥
गगन मँडल मे लगि समाध ।
ससि औ सूरहिं‖ राखु बाँध ॥५॥
लहरि लहरि बहै जोति धार ।
थकित भयो मन मिलि हमार ॥ ६ ॥
कह गुलाल मेरि पुजलि आस ।
चरन कमल महँ लियो है बास ॥ ७ ॥

(१४)

मन मधुकर¶ खेलत बसंत ।
बाजत अनहद गति अनंत ॥१॥
बिगसत कमल भयो गुँजार ।
जोति जगामग कर पसार ॥ २ ॥
निरखि निरखि जिय भयो अनंद ।
बाभल मन तब परल फंद ॥ ३ ॥

*बिष्णु । †चोटी। ‡आनंद । §पाँव । ‖दाहिनी बाँई स्वाँसा । ¶भँवरा ।

लहरि लहरि बहै जोति धार ।
चरन कमल मन मिलो हमार ॥ ४ ॥
आवै न जाइ मरै नहिं जीव ।
पुलकि पुलकि रस अमिय पीव ॥ ५ ॥
अगम अगोचर अलख नाथ ।
देखत नैनन भयो सनाथ ॥ ६ ॥
कह गुलाल मोरी पुजलि आस ।
जम जीत्यो भयो जोति बास ॥ ७ ॥

(१५)

चलु मेरे मनुवाँ हरि के धाम ।
सदा सरूप तहँ उठत नाम ॥ टेक ॥
गोरखदत्त गये सुकदेव । तुलसी सूर भये जैदेव ॥ १ ॥
नामदेव रैदास दास । वहँ दास कबीर कै पुजलि आस ।२।
रामानंद वहँ लिय निवास । धना सेन वहँ क्रुस्न दास ।।३।।
चतुरभुज नानक सतन गनी । दास मलूका सहज बनी ।।४।।
यारी दास वहँ केसोदास । सतगुरु बुल्ला चरन पास ।।५।।
कह गुलाल का कहौं बनाय । संत चरन रज सिर समाय ।।६।।

॥ होली ॥

(१)

आरति आनँद मंगल गायो सहज कै फाग लगायो ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है गूँज दसौ दिसि छायो ।।१।।
जागत जोति झलाझलि झलकत निरखत रूप लगायो ।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि डारत तत्त अबीर उड़ायो ।। २ ।।

होरी होरी होत निरंतर सतगुरु खेल खिलायो ।
कह गुलाल स्वामी घर आये पुलकि पुलकि लपटायो ॥३॥

(२)

मेरे आनँद होरी आई री ॥ टेक ॥
आठ पहर धुनि लगी रहतु है,
कंटक काल पराई री ॥१॥
विमल विमल सखियाँ गुन गावहिं,
रंग दसौ दिसि छाई री ॥ २ ॥
अनुभौ फाग परम तत लागो,
पायो प्रेम लोभाई री ॥ ३ ॥
लोक वेद कै धोखा छूटलि,
लज्जा गइलि लजाई री ॥ ४ ॥
प्राननाथ से होड़ा* लागल,
ब्रह्म पदारथ पाई री ॥ ५ ॥
कह गुलाल स्वामी वर पावल,
सतगुरु वचन सहाई री ॥ ६ ॥

(३)

सतगुरु सँग होरी खेलो अनहद तूर बजाई ॥ टेक ॥
काया नगर मे होरी खेलो प्रेम कै परल धमारी ।
पाँच पचीस मिलि चाचरि गावहि, प्रभुजी की बलिहारी॥१॥
सहज कै फाग पखो निस वासर, भरि छूटै पिचुकारी ।
नाद विंदहीं गाँठि पखो जब, परलि परस्पर मारी॥२॥

*होड़, बाजी।

तारी दै दै भाँवरि नावहिं, एक तेँ एक पियारी ।
तत्त अबीर उड़ावत कर धरि, काहू कोउ न सँभारी ॥३॥
अब खेलो मन महा मगन ह्वै, तन मन सर्वस वारी ।
कह गुलाल हम प्रभु सँग खेलल, पूजलि आस हमारी ॥४॥

(४)

सतगुरु घर पर परलि धमारी,
होरिया मैँ खेलौँ गो ॥ टेक ॥
जूथ जूथ सखियाँ सब निकरीं,
परलि ज्ञान के मारी ॥ १ ॥
अपने पिय सँग होरी खेलौँ,
लोग देत सब गारी ॥ २ ॥
अब खेलो मन महा मगन ह्वै,
छूटलि लाज हमारी ॥ ३ ॥
सत्त सुकृत सोँ होरी खेलो,
संतन की बलिहारी ॥ ४ ॥
कह गुलाल पिय होरी खेलो,
हम कुलवंती नारी ॥ ५ ॥

(५)

आरती ले चली बनाई । फगुवा घर घर आनँद गाई ॥टेक॥
पाँच पचीस औ तीन सोहागिनि, गावहिं प्रभु सोँ चित लाई ॥ १ ॥
ऊँच नीच मे आरति पूरन, दसौ दिसा में छाई ॥ २ ॥
लोक बेद सब दान दियो है, गगन मे आरति गाई ॥३॥

सुर नर नाग देव मुनि थाके। काहु न आरति पाई॥४॥
संत साध महँ आरति पूरन। उनहीं आरति पाई॥५॥
कह गुलाल हम होरी खेले। सतगुरु फाग खेलाई॥६॥

(६)

कोउ गगन मे होरी खेलै।
पाँच पचीसो सखियाँ गावहि, चानि दसौ दिसि मेलै॥१॥
देत डंक अनुभौ निसु वासर, झूमि झूमि गति डोलै।
प्रेम लसित पिचुकारी छूटत, तारी दै दै बोलै॥२॥
तत्त अबीर उडत नभ छायो, ज्ञानहीन मति तोलै।
थकित भयो पग-मग न परत, ढिग सुधि बिसरी गयो बोलै॥३॥
अब की बार फाग दीजे प्रभु, जान देवँ नहिं तो लै[*]।
कहे गुलाल कृपाल दयानिधि, नाम दान दै गैलैं[†]॥४॥

(७)

समय लगो हरि नाम हो, होरी आई।
काया नगर में फाग बनायो, तिर बिधि रग लगाई॥१
पाँच सखी मिलि रास रचो है, अगम अबीर उड़ाई।
सुखमन भरि पिचुकारी डारत, छिरकत प्रभुहिं बनाई॥२
दसौ दिसा में चाचरि ऊठत, मारू प्रेम बजाई।
लागी लगन टरत नहि टारी, सुधि बुधि सबहिं भुलाई॥३
लोक वेद न्योछावरि डारौं, ममता मैल बहाई।
कह गुलाल पिय साथ सोहागिनि, घरहीं होरी पाई॥४॥

[*]तब तक। [†]गये।

(८)

प्रेम नेम चाचरि रच्यो । पुलकि पुलकि प्रभु पास ॥टेक॥
चाँद सूर उलटे चले, उड़त अबीर अकास ॥ १ ॥
इँगल पिंगल खेलन लग्यो, सुखमन सहज निवास ॥२॥
तिरबेनी फगुवा बन्यो । मानिक झरि चहुं पास ॥ ३ ॥
कुंज कुंज निरती पर्यो, चंद्र बदन प्रभु पास ॥ ४ ॥
कह गुलाल आनँद भयो, पूजलि मन की आस ॥ ५ ॥

(९)

निसु बासर होरी खेले हो, सहज सुन्न धुनि लाई ॥टेक॥
बिगसि कमल चाचरी रच्यो है, दुन्द उठ्यो नभ छाई।
प्रेम भरी पिचुकारी छूटत, तत्त अबीर उड़ाई ॥ १ ॥
बिनु बाजे तहँ बाज उठतु है, आनँद नाहिं समाई।
कै बैराग सखी सब गावहिं, लज्जा जात लजाई ॥ २ ॥
संतन मिलि तहँ होरी खेलो, नौबत डंक बजाई ।
फगुवा दान मिल्यो मन पूरन, जन गुलाल बलि जाई ॥३॥

(१०)

अलख पुरुष संग खेलो होरी, गुरु नाम के डंक बजोरी ॥टेक॥
ब्रह्मा विस्नु सिव खेल खेलावहि, सब्द के फाग रचो री।
आतम नारि सखी लै गवनहि , तत्त के गाँठि दियो री॥१
अगम अबीर उड़त दस हूं दिसि, प्रेम पिचुकारि भिंगो री ।
मनमोहन छबि रास रच्यो है, सुखमन निरत करो री॥२
लागी लगन टरत नहि टारे, काहू कोउ न बुझो री।
कह गुलाल हम प्यारी पिया संग,अनुभौ फाग बनो री॥३॥

(१२)

न राजा खेले होरी, अनुभव तत्त अखाड़े ॥ टेक ॥
अनहद घंटा बाजु रैन दिन, ता मे सुरति परो री ॥ १ ॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहिं, सुरति सों निरति भरो री २
काया नगर में होरी खेलो, रवि ससि दोऊ बटोरी ॥ ३ ॥
सुखमन भरि पिचुकारी छूटत, निरंझर अगम झरो री ४
जाग्यो फाग परम पद लाग्यो, सतगुरु वचन फरो री ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम होरी खेलल, प्रभु सौं दै गंठजोरी ॥ ६ ॥

(१३)

फागुन समय सोहावन हो, नर खेलहु अवसर जाय ॥ १ ॥
यह तन बालू मंदिर हो, नर धोखे माया लपटाय ॥ २ ॥
ज्यौं अँजुली जल घटत है हो, नेकु नहीं ठहराय ॥ ३ ॥
पाँच पचीस बड़ि दारुन हो, लूटहिं सहर बनाय ॥ ४ ॥
मनुवाँ जालिम जोर है हो, डाँड लेत गरुवाय* ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम बाँधल हो, खात है राम दोहाय ॥ ६ ॥

(१४)

प्रेम कै फरल मनोरवा† हो, दस दिस भयो प्रकास ॥ १ ॥
निस दिन नौबति बाजै हो, अनहद उठत अकास ॥ २ ॥
पाँच नारि गुन गावहिं हो, पुलकि पुलकि प्रभु पास ॥ ३ ॥
अधर महल घर बैठक हो, मेटल जम कै त्रास ॥ ४ ॥
नहि आइब नहिं जाइब हो, चरन कमल में बास ॥ ५ ॥
कहै गुलाल मनोरवा हो, छोड़ि देव जग आस ॥ ६ ॥

*भारी डड। †एक राग का नाम।

(१५)

नाम रंग होली खेलो जाई, फिर पाछे पछिताई ॥ टेक ॥
यहि तन फागु मचो परमारथ, अवधि वदो* दिन ढाई १
काल अगिन जब मस्तक जरि है, छूटी सब चतुराई २
अगर गुलाल कुमकुमा केसरि, चेतन अबिर उड़ाई ३
इंगल पिंगल दोउ भरत उर्ध मुख, छिरकत प्रभुहिं बनाई ४
दुइ बिधि फाग बनो या जग मे, जिन जैसो मन भाई ५
कह गुलाल यह अगम फागु है, बिन सतगुरु नहिं पाई ६

(१६)

अधर रंग फगुवा मन खेलो, रबि ससि दूनौं संग मेलो ॥टेक॥
मन बैराग चित चोर जे धैकै, नेह निरंतर लाई ।
पाँच पचीस औ तीन मवासी, पकरि गगन ले जाई ॥ १ ॥
सुन्न नगर में आसन माड़ो, अद्भुत भेप बनाई ।
ब्रह्मा बिस्नु सीव तहँ नाहीं, फाग बरनि नहिं जाई ॥ २ ॥
नादहिं बिंदहिं गाँठि परो है, ज्ञान कि जोति समाई ।
उठत लहरि अनंत राग तहँ, अनुभौ चाचरि गाई ॥ ३ ॥
आवागवन रहित जबहीं भयो, जम सिर डंक बजाई ।
कह गुलाल काल जब अइहै, मरिहै हमरी बलाई ॥ ४ ॥

(१७)

काया बन खेलहु मगन फाग । अधर महल घर रंग लाग ।१।
चित चंचल जब संग लाग । पाँच पचीसो सोउ न जाग ॥२॥
सत सत लागल सहज आग । खेलत खेलत तब फरल भाग ।३

---

* मुक़र्रर ।

तत्त लगल जब सोहं ताग। निरतत मनुवाँ गतिहिं पाग ॥४॥
देख दमामा दुन्द भाग । तन नेवछावर देत फाग ॥५॥
एक अवर नहि सबहिं त्याग। थकित भयल मन चरन लाग ६
कह गुलाल यह अगम फाग । जम जीतल घर राज लाग॥७॥

(१८)

होरी खुलि खेलो, प्रभु सोँ प्रीति लगाई ।
सब सखियन एकहि मत कीयो, फाग बरनि नहिं जाई ॥१॥
काया नगर मे होरी खेलो, ससि औ सूर समाई ।
प्रेम जडित पिचुकारी छूटत, नौबति दै दै गाई ॥ २ ॥
दसौ दिसा चाचरि धुनि होवै, तत्त अबीर उडाई ।
इँगल पिंगल दोउ रास बनावहिं, सो सुख बरनि न जाई ॥३
थकित भयो सुधि बुधि हरि लीन्हो, तन मन सबहिं भुलाई।
कह गुलाल हम होरी खेल्यो, प्रभु सोँ गाँठि बँधाई ॥ ४ ॥

(१९)

कोउ आतम भक्ति ज्ञान जाने ।
तब सहज सुरत मनुवा माने ॥ टेक ॥
याही रीति प्रीति चरनन सोँ ।
खोजि सतगुरु पहिचाने ॥ १ ॥
तबही होय प्रेम पद पूरन ।
फाग परम पद आने ॥ २ ॥
एका एकी खेल बनो जब ।
सिव घर सक्ति समाने ॥ ३ ॥

अनत कोटि धुनि बाजा बाजे ।
अगम निगम लपटाने ॥ ४ ॥
थकित भयो रस प्रेम मगन मन ।
गति काहू ना जाने ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम नागरि* प्रभु सँग ।
नाम पर्यो दीवाने ॥ ६ ॥

(२०)

होरी मन खेले जहँ उठत गुंज झनकार ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है बिनु बाजे बिनु तार ॥टेक॥
काम क्रोध तहवाँ नहिं देखियत, उहवाँ वार न पार।
दसो दिसा में होरी ऊठत, प्रभुजी के दरबार ॥१॥
बिमल बिमल सखियाँ गुन गावहिं, पंचम सुर रुचिकार†।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि मारत, भींजत ब्रह्म अपार ॥२॥
अनुभव फागु खेलत सुख लाग्यो, निर्मल ज्ञान बिचार।
कोटि सूर ससि कोटि कोटि छवि, झूमक‡ परल बिहार॥३॥
संतन संग मिलि होरी खेलो, प्रीतम चरन निहार ।
कह गुलाल चरनन बलिहारी, बलि बलि प्रान पियार ॥४॥

(२१)

चित डोलन लागो मौजी चाचरि आयो री ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ,सोह सुर भरि गायो री॥१॥
काया नगर मे रास रचो है, सखियन झूमक नायो री ।
अष्ट जाम को खेल बनोहै, निर्त सोहावन भायो री ॥२॥

*चतुर स्त्री । †मन भावन । ‡झूमका, होली की एक राग का भी नाम है।

अनत कोटि धुनि बाजा बाजे ।
अगम निगम लपटाने ॥ ४ ॥
थकित भयो रस प्रेम मगन मन ।
गति काहू ना जाने ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम नागरि* प्रभु सँग ।
नाम पस्यो दीवाने ॥ ६ ॥

(२०)

होरी मन खेले जहँ उठत गुंज झनकार ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है बिनु बाजे बिनु तार ॥टेक॥
काम क्रोध तहवाँ नहिं देखियत, उहवाँ वार न पार।
दसो दिसा में होरी ऊठत, प्रभुजी के दरबार ॥१॥
बिमल बिमल सखियाँ गुन गावहिं, पंचम सुर रुचिकार†।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि मारत, भींजत ब्रह्म अपार ॥२॥
अनुभव फागु खेलत सुख लाग्यो, निर्मल ज्ञान बिचार।
कोटि सूर ससि कोटि कोटि छबि, झूमक‡ परल बिहार॥३॥
संतन संग मिलि होरी खेलो, प्रीतम चरन निहार ।
कह गुलाल चरनन बलिहारी, बलि बलि प्रान पियार ॥४॥

(२१)

चित डोलन लागो मौजी चाचरि आयो री ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ,सोहं सुर भरि गायो री॥१॥
काया नगर में रास रचो है, सखियन झूमक नायो री ।
अष्ट जाम को खेल बनो है, नित सोहावन भायो री ॥२॥

*चतुर स्त्री । †मन भावन । ‡झूमका, होली की एक राग का भी नाम है।

अगम अबीर उड़त दसहूं दिसि, मुरली धुनि छवि छायोरी।
कह गुलाल मेरो ऐसो साहव, घरहीँ फाग मचायो री॥३॥

(२२)

हर दम बंसी बाजी, बाजि निवाजी मेरे मन मे ॥टेक॥
जहँ सहज सरूप समाजी, सेत धजा सिर ऊपर गाजी॥१
उमँगि उमँगि मानिक मनि बरसत, मुक्ता तहँ झरि लागी॥२
सत्त सब्द ततकार उठत है, संत सदा सुख राजी ॥३॥
जम जीत्यो घर नौबति बाजै, कह गुलाल गति साजी ॥४॥

(२३)

अहो मन होरी मैाज ले आव ॥१॥
दम दम जान तपावो, चित धरि ठाम ठमाव* ॥२॥
तत्त अबीर समूह उड़ावो, तिरबिधि रंग बहाव ॥३॥
काया नगर में रास रचो है, सहजहिं नूर जगाव ॥४॥
गगन मँडल मे चाचरि ऊठत, उघट† ताल भरि गाव॥५॥
कह गुलाल प्रभु आयसु‡ दीन्हो, फागु नाम फल पाव ॥६॥

(२४)

मेरी नाथ सोँ होरी लागी री ॥टेक॥
पाँच पचीस मिलि चाचर गावहिं, धुधुकि धुधुकि रस पागी री॥ १ ॥
तत्त अबीर उड़त दसहू दिसि, अनुभव तुरिया जागी री॥२॥
आठ पहर नौबति तहँ बाजै, धुनि सुनि पातक भागी री।३।
आनँद उठत रहत निसि बासर, रंग भरो अनुरागी री॥४॥

*अस्थान मे ठहरावो। †ऊँचा। ‡आज्ञा।

अनत कोटि धुनि बाजा बाजे ।
अगम निगम लपटाने ॥ ४ ॥
थकित भयो रस प्रेम मगन मन ।
गति काहू ना जाने ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम नागरि* प्रभु सँग ।
नाम पस्यो दीवाने ॥ ६ ॥

(२०)

होरी मन खेले जहँ उठत गुंज झनकार ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है बिनु बाजे बिनु तार ॥टेक॥
काम क्रोध तहवाँ नहिं देखियत, उहवाँ वार न पार।
दसो दिसा में होरी ऊठत, प्रभुजी के दरबार ॥१॥
बिमल बिमल सखियाँ गुन गावहिं, पंचम सुर रुचिकार†।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि मारत, भींजत ब्रह्म अपार ॥२॥
अनुभव फागु खेलत सुख लाग्यो, निर्मल ज्ञान बिचार।
कोटि सूर ससि कोटि कोटि छवि, झूमक‡ परल बिहार॥३॥
संतन सँग मिलि होरी खेलो, प्रीतम चरन निहार ।
कह गुलाल चरनन बलिहारी, बलि बलि प्रान पियार ॥४॥

(२१)

चित डोलन लागो मौजो चाचरि आयो री ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ,सोह सुर भरि गायो री॥१॥
कांया नगर में रास रचो है, सखियन झूमक नायो री ।
अष्ट जाम को खेल बनोहै, निर्त सोहावन भायो री ॥२॥

*चतुर स्त्री । †मन भावन । ‡झूमका, होली की एक राग का भी नाम है।

अगम अबीर उड़त दसहूं दिसि, मुरली धुनि छवि छायो री।
कह गुलाल मेरो ऐसो साहब, घरहीं फाग मचायो री॥३॥

(२२)

हर दम बंसी बाजी, बाजि निवाजी मेरे मन मे ॥टेक॥
जहँ सहज सरूप समाजी, सेत धजा सिर ऊपर गाजी॥१
उमँगि उमँगि मानिक मनि बरसत, मुक्ता तहँ झरि लागी२
सत्त सब्द ततकार उठत है, संत सदा सुख राजी ॥३॥
जम जीत्यो घर नौबति बाजे, कह गुलाल गति साजी ॥४॥

(२३)

अहो मन होरी मैाज ले आव ॥१॥
दम दम ज्ञान तपावो, चित धरि ठाम ठमाव* ॥२॥
तत्त अबीर समूह उड़ावो, तिरविधि रंग बहाव ॥३॥
काया नगर में रास रचो है, सहजहिं नूर जगाव ॥४॥
गगन मंडल में चाचरि ऊठत, उघट† ताल भरि गाव॥५॥
कह गुलाल प्रभु आयसु‡ दीन्हो, फागु नाम फल पाव ॥६॥

(२४)

मेरी नाथ सोँ होरी लागी री ॥टेक॥
पाँच पचीस मिलि चाचर गावहिं, धुधुकि धुधुकि रस
पागी री ॥ १ ॥
तत्त अबीर उड़त दसहू दिसि, अनुभव तुरिया जागी री॥२॥
आठ पहर नौबति तहँ बाजे, धुनि सुनि पातक भागी री।३।
आनँद उठत रहत निसि बासर, रंग भरो अनुरागी री॥४॥

*अस्थान में ठहरावो। †ऊँचा। ‡आज्ञा।

खेलत खेलत मगन भयो मन, मिलि रहु नाम सुहागी री॥
कह गुलाल पिय होरी दीन्हो, हम धन बड़ी सभागी री ६

(२५)

मनुवाँ मोर भइल रंग बाउर* ।
सहज नगरिया लागल ठाउर† ॥१॥
उदित चंद झरै तहँ मोती ।
गरत‡ अमी वहँ नाम के जोती ॥२॥
अँगना बुहार के बाँधल केसा ।
कइलूँ सिंगरवा गइलूँ पिय के देसा ॥३॥
आनँद मंगल बाजत तूर ।
फरल लिलरवा भइलूँ पिय के हजूर ॥४॥
कह गुलाल नाम रस पाई ।
मगन भइल जिव गइल बलाई ॥५॥

(२६)

आजु मन रावल§ रचल धमारी ।
कुहुकि कुहुकि हरि मिलल सुखारी ॥१॥
काया नगर में खेल पसारी ।
भरि भरि रूप थकलि नौ नारी ॥ २ ॥
जगर मगर अति लगत पियारी ।
बाजत अनहद धुनि झनकारी ॥ ३ ॥
तहाँ न रवि ससि पुरुष न नारी ।
आपुहिं अपने भइल वुझारी ॥ ४ ॥

*मस्त । †ठिकाने । ‡निचुड़ता है । §सिपाही ।

कह गुलाल हम फाग विचारी ।
अब न खेलब सतगुरु वलिहारी ॥ ५ ॥

(२७)

को जाने हरि नाम की होरी ॥ टेक ॥
चौरासी मे रमि रह पूरन, तीहुर खेल बनो री ॥ १ ॥
घूमि घूमि के फिरत दसो दिसि, कारन नाहि छुटो री॥२॥
नेक प्रीति हिये नाहीं आयो, नहि सतसग मिलो री॥३॥
कहै गुलाल अधम भो प्रानो, अबरे अबरि गहो री॥४॥

(२८)

मै तो खेलौंगी प्रभुजी से होरी ॥ टेक ॥
प्रेम पिचुकारी भरि भरि डारत, तत्त अबीर भरि झोरी ॥१॥
निसु बासर को फागु परो है, घूमत लगलि ठगौरी ॥२॥
लागो रग सोहंग गुन गावहिं, निरतत बाँहा जोरी॥३॥
कह गुलाल सुख बरनि न आवे, चाखत अधर कटोरी ॥४॥

(२९)

मन मे हम खेलैं होरी, आनँद डंक बजाई ॥ टेक ॥
काया कोथरा* भरि भरि लीन्हो, ज्ञान अबीर उडो री ।
सुखमन भरि पिचुकारी छूटत, सुरति सौं नेह लगो री॥१॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहि, सहज के फाग बनो री ।
लागो रंग टरत नहिं टारे, आपु तैं आपु पगो री ॥२॥
प्रेम पदारथ प्रापत भो जब, एक तैं एक बझो† री ।
उमगि उमँगि चित रूप समानो, तिहु पुर भाग बढ़ो री॥३॥

*तीन तरह अर्थात गुनों का । †हाथ पकड़ के । ‡मिलना ।

भर्म भव मारि कै क्रोध को जारि कै,
चित्त धरि चोर को कियो यारा ॥ ३ ॥
कहै गुलाल सतगुरू किरपा कियो,
हाथ मन लियो तब काल मारा ॥ ४ ॥

(४)

मन सुक्ता होवै नाम रस नित लेवै,
हंस ह्वै रूप तब दसा पावै ॥ १ ॥
मोती मुक्ता चुँगै कीट में नहिं पगै
सदा चेतन्य नहिं भरम आवै ॥ २ ॥
देखि दीदार सँभारि ले आपु को,
और नहिं फेर कहुँ दूरि धावै ३ ॥
कहैं गुलाल यहि भाँति जो जन होवै,
दिव्य दीदार सो दरस पावै ॥ ४ ॥

(५)

भयो जब दरस तब परस साहब मिलो,
अवर सब दूर नहिं नेर[*] आया ॥ १ ॥
पाप अरु पुन्न कहँ कर्म अरु धर्म कहँ,
तिक्त[†] संसार तेँ अलख गाया ॥ २ ॥
असल[‡] अमलै[§] पिवे नाम लेते जिवे,
ज्ञान अरु भेद कोउ नाहिं पाया ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल वे धन्य सो दास है,
मुलुक खुलास नहिं आउ माया ॥ ४ ॥

[*]पास। [†]त्यागी। [‡]नशा। [§]मल से रहित।

(६)

प्रेम परतीत धरि सुरति सों निरति करि,
याही है ज्ञान सतगुरू पावै ॥ १ ॥
न तो धोख धंधा लिये कपट डारे हिये,
मोर अरु तोर मे जन्म जावे ॥ २ ॥
नाम सौं रीति नहिं साध सौं प्रीति नहिं,
धोख लिये ज्ञान भरि जन्म धावे ॥ ३ ॥
कहै गुलाल यह वचन साँचो सुनो,
यही है सत्त जो कोऊ पावे ॥ ४ ॥

(७)

ज्ञान उद्योत* करि हृदय गुरु वचन धरि
जोग सग्राम के खेत आवै ॥ १ ॥
संत सो पूर है सूर मॉड़े रहै,
कंच कुच† आदि नहिं ओर आवै ॥ २ ॥
अगम असाध यह मारि कैसे करै,
काटि के सीस आगे धरावै ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल तब राम किरपा करैं,
जीति भा सूर सो खेत पावै ॥ ४ ॥

(८)

राम के काम मोकाम नहिं करत नर,
फिरत ससार चहुं ओर धाया ॥ १ ॥
करत संताप सब पाप सिर पर लिये,
साध औ संत नहिं नेह लाया ॥ २ ॥

*प्रकाशित । †कनक कामिनी ।

(१२)

जिन आपु ना सँभारा । सो वहि मुए संसारा ॥ १ ॥
चित चेत हूं जो आवे । चित चरन में समावे ॥ २ ॥
तव होय प्रभु कि दाया । तव सतगुरुउन पाया ॥ ३ ॥
जव सतगुरु बोलि वानी । तव झरत रतन खानी ॥४॥
यह दिल में समावे । चित अनत नाहिं जावे ॥५॥
रहु चरन में समाई । गुरु देइ रहु दुहाई ॥ ६ ॥
जव गुरू कहे मेरा । तव काज होय तेरा ॥ ७ ॥
तव फरे सतगुरु वानी । तवभयो जुग जुग ध्यानी॥८॥
लवलीन होय जवहीं । तोहिं राम मिलै तवहीं ॥९॥
यह भेद कवन पावै । जेहि सतगुरू वतावै ॥१०॥
कहै गुलाल जानी । तुम सुनहु संत ज्ञानी ॥११॥

(१३)

सतगुरु जो कीन्ह दाया । तव काढ लियो माया ॥ १॥
भजु राम रे गॅवारा । इसतनहिं का* निहारा ॥२॥
यह जायगो रे भाई । जल छोड़ पियो काई ॥ ३ ॥
कहॅं इस्क है दिवाना । मन कपट मे भुलाना ॥ ४ ॥
यह दाव है रे भइया । तुम काहि† में भुलइया ॥५॥
यह खेल नाहि भाई । दिन ऐस ही चलि जाई ॥६ ॥
कुफरान जिकिर छोड़ो । पद सांच देव गोड़ो‡ ॥ ७ ॥
तव काज होय तेरा । तव नाहि कोउ नेरा ॥ ८ ॥

*क्या । †किस । ‡सच्ची राह में पैर धरो ।

वे जिकिर में ठहराने । वइ पाँच हैं विराने* ॥ ९ ॥
अवर कहीं धावे । तो निकट नाहिं आवे ॥१०॥
पच्चीस हैं बरजोरे । कुफरान बाज सोरे† ॥११॥
यह काया कोट गाढी । विकटे जु ठाठ ठाढी ॥१२॥
यह भेद नाहिं पावे । नर घोख धंध धावे ॥१३॥
यह करत रहैं जोरे । काहू मुखहुँ न मोरे ॥ १४ ॥
जो नाम के अनुरागी । तिन निकट नाहि लागी॥१५॥
वइ मस्त है दिवाने । महबूब साहब जाने ॥१६॥
नित रहत वे उदासी । नहिं जायँ प्राग कासी ॥१७॥
घर हीं में साहब सेवैं । पग अनत नाहिं देवैं ॥१८॥
कहै गुलाल बैरागी । जेहि नाम रटन लागी ॥१९॥

(१४)

अहो सुनो आइ माई । इह कवनि है बडाई ॥ १॥
जिन आव‡ तैं संवारा । उन का§ तेरा बिगारा ॥२॥
तुम वाहि सुकर मानो । साँचे साहब को जानो ॥३॥
यह करम है घनेरा । नर फिरत रहत बौरा ॥ ४ ॥
कहिं पत्थल और पानी । जा पूजहिं अज्ञानी ॥ ५ ॥
यह काम नाहि तेरा । तू का भुले मैं मेरा ॥ ६ ॥
उस द्वार पै जो जाया । फिर कवहिं नाहिं आया ॥७॥

*पाँचो विरोधी दूत नामके सुमिरन से स्थिर हो जायँगे । †पच्चीस प्रकृतियाँ जबरदस्त नास्तिकता रूपी बाज सरीखी है । ‡पानी, बुंद । §क्या ।

वहँ भेद है न कोई। वहँ जाति नाहिं दोई ॥ ९ ॥
वहँ बंधु ना विरादर। वहँ घात नाहिं आदर ॥ १० ॥
जिन इस्क़ वही पाया। वह आवहीं नहिं माया ॥११॥
सब रोज ध्यान धारी। वह मिलि रहे अपारी ॥ १२ ॥
सुर नर नाग देवा। सवहीं करैं जो सेवा ॥ १३ ॥
वह राम के भिखारी। हर दमै लागि तारी ॥ १४ ॥
चित अनत नाहिं जावे। मौज साहब की पावे ॥ १५ ॥
वह रहत हैँ निनारा। वह राम के हैँ प्यारा ॥ १६ ॥
बेमहल* जो धावे। सो का सवाव† पावे ॥ १७ ॥
यह भूले जो भाई। सवहि तिन को जाई ॥ १८ ॥
खबरदार हो बंदा। तुम का भुलो रे अंधा ॥ १९ ॥
मालूम मज़्हब‡ सोई। जिन आपु भिस्त जोई ॥ २० ॥
जो अवर कहीं धावे। तो निकट नाहिं आवे ॥ २१ ॥
गुलाल कहत पुकारी। वह वचन की बलिहारी ॥ २२ ॥
नर चेत करो वोई। अवर काम नाहि कोई ॥ २३ ॥

(१६)

॥ दोहा ॥

अगम निगम सबहीं थको, रहो अचल ठहराय।
कह गुलाल यह रेखता, कोइ विरला साहब पाय।

॥ रेखता ॥

अहो मन देखो भाई, का कर्म भूलो जाई ॥१॥
जब जोर जवरि जावे, तब खूब खबरि आवे ॥२॥

*बेठिकाने। †भलाई। ‡अच्छा पथ।

का भूलो दिवाना, यह जायगा गुमाना ॥ ३ ॥
जब दिल में सिदिक* आवे, तब धोख धंध जावे ॥४॥
यह सुख सितून बड़ाई, तेरे काहु काम न आई ॥ ५ ॥
भजु राम नाम प्यारा, लियो वुन्द तँ निकारा ॥ ६ ॥
इह चित में धरो वोई, अवर काम नाहिं कोई ॥ ७ ॥
इह मन बड़ा बलइया, इह मन करे सहइया ॥ ८ ॥
इह मनहिं धोख देवे, इह मन चेता होवे ॥ ९ ॥
इह मन बूझु भइया, इह जन्म पदारथ जइया ॥१०॥
इह मन नाच नचइया, इह मन आस लेवइया ॥११॥
जिन मनै नहिं पहिचाना, वे भूले फिरहिं दिवाना ॥१२॥
जब हाथ इ मन आवे, तब दाँव बंद† पावे ॥ १३ ॥
इह इस्क करै भाई, इह करकसा बलाई ॥ १४ ॥
जिन इह कि ताय‡ पाया, तिनहिं आपु बनाया ॥१५॥
का जायँ मथुरा कासी, वइ मिलि रहे अबिनासी ॥१६॥
कह गुलाल जो पावे, बहुरि न भवजल आवे ॥१७॥
जो जिकिर खेल खेले, सोइ आपु आपु में मेले ॥१८॥
बेमहल न जावे, सो खेल ऐस पावे ॥ १९ ॥
बरे रूह महताब, इस्क लगे वइ सिताब§ ॥ २० ॥
तब कुफर‖ न होवे, तब हक्क अदल जोवे ॥ २१ ॥
वइ मस्त है फकीर, दिल चसम है हीर¶ ॥ २२ ॥

*सत्य । †घात । ‡आँच, तपन । §जल्द, तुर्त । ‖नास्तिकता । ¶दिल और आँखों से हीर (सारांश) यानी मालिक का प्रेम बसा है ।

दरद* माहिं† आवे, काहू जोर‡ ना सतावे ॥२३॥
अवर करत है जो कोई, दोजख§ भिस्त‖ मे समोई ॥२४॥
गुन अवर का विचारा, तिन चेत भव संभारा ॥२५॥
एक एक ते विचारा, सोइ संत है पियारा ॥२६॥
तिन्हें पीर अपनाया, अवर फिरत हैं बैाराया ॥२७॥
इह लोक कर्म जोरे, बेमहल बात तोरे ॥२८॥
सब कहत है ज्ञाना, खबरि अबरि मैदाना ॥२९॥
जोर जुलुम अकस आवे, तोहिं कहो को बचावे ॥३०॥
इह माया है ठगइया, खबरदार देखु भइया ॥३१॥
जबून नाहिं खावे, न तो गैब गोता पावे ॥३२॥
चित चेत हो गॅवारा, नहिं जन्म बार बारा ॥३३॥
इक सिद्ध सेव सेवो, वोइ नाम से लो लेवो ॥३४॥
सोइ जोगि ब्रह्मचारी, वोइ सिद्ध है मुरारी ॥३५॥
जिन ऐसा पद पावे, तिन नाम अचल गावे ॥३६॥
कह गुलाल जो पइया, सोइ नाम मे समइया ॥३७॥
जो राम को भजइया, वोइ संत सो कहइया ॥३८॥
अवर धोख ही जु धावे, दर धोख सोई पावे ॥३९॥
नाहीं है इस्क यारा, बेमहल को पसारा ॥४०॥
जब रे आया जोरे, कुफरान करत बैारे ॥४१॥
रूह हक्क नाहिं जाना, तुम का भुलो गुमाना ॥४२॥
इह ऐसी है देही, कोउ काम नाहिं होही ॥४३॥

*दया। †अंतर में। ‡जुल्म, सख्ती। §नर्क। ‖स्वर्ग।

बार बार धोखा देवे, खबर कबहुं नाहिं लेवे ॥४४॥
यह झूठ है पसारा, खबरदार बंदे यारा ॥४५॥
इस्क करो साँच सोई, जहँ काहु जोर न होई ॥४६॥
मन सुबानी* सानी, तू खबरि नाहिं जानी ॥४७॥
वाह वाह भाई मेरा, यह जायगा सब तेरा ॥४८॥
जुलम न करो कोई, यह काम नाहि कोई ॥४९॥
इस्क जिसे न हूआ, सो खाक नाहिं धूवाँ ॥५०॥
जो थोरि लजत† पावे, तौ वाही में भावे ॥५१॥
जब मन मुरीद होवे, तब जागे भा‡ सोवे ॥५२॥
सोइ राम रमै भइया, खलक कवन की चलइया॥५३॥
हरि दम दम बोले, राम राम रमत डोले ॥५४॥
जब कुफर न खावे, हक एक ही लगावे ॥५५॥
अस रहनि जो रहइया, मन कर्मना टरइया ॥५६॥
जन होवे जो तेरा, तौ कवन करे मेरा ॥५७॥
महबूब होय सोई, इस्क चरन मे समोई ॥५८॥
सब पीर दरद जाने, कबौं धोखहूं न आने ॥५९॥
वे डौल§ है फकीर, मौज मौज माहिं धीर ॥६०॥
जो सरन उन कि जावे, अद्भुत पदार्थ पावे ॥६१॥
कह गुलाल सुनु ज्ञानी, तिन राम नाम जानी ॥६२॥

*अच्छी बानी। †लज्जत ‡या। §ढंग। ‖मौज ही मौज मे धीर (अस्थिर) है।

मंगल

(१)

गुन जानी गुनवंत नारि, कंत मन भाइल हो ।
सुभ दिन लगन सोधाय, तबहिं मन लाइल हो ॥ १ ॥
अर्ध उर्ध के मध्य, तो चौक पुराइल हो ।
मुक्ता भरि भरि थाल, तो आरति बनाइल हो ॥ २ ॥
गंग जमुन के घाट, तो कलस धराइल हो ।
मानिक बरे दिन रात, तो चँवर डुलाइल हो ॥ ३ ॥
चौमुख दीपक बारि, तो माँड़ो छाइल हो ।
निझरि झरी तहँ लाय, अमृत फल पाइल हो ॥ ४ ॥
गावहि सखियाँ सहेलरि, दुलहिन भाइल हो ।
दास गुलाल सोहागिनि, प्रभु सँग पाइल हो ॥ ५ ॥

(२)

अविनासी दुलहा हमारा हो ॥
जीतो जोग भोग सब त्यागी, भवसागर सोँ न्यारा हो ॥१॥
किरपा कीन्हो सतगुरु दीन्हो, उलटा चौक पसारा हो ॥२॥
तन मन धन न्योछावरि डारोँ, कंत मिलो प्रभु यारा हो ॥३॥
सुखमन सेज निरंतर डासोँ*, सोहं चँवर सुढारा† हो ॥४॥
ताही पलँग मोर पिय बैसहिँ, गावौँ मंगलचारा हो ॥५॥
अगम अपार अनुभव अनमूरत, लोक बेद से पारा हो ॥६॥

*बिछाऊँ । †सुंदर रीत से हिलाया ।

कहै गुलाल भाग हम पाये, किये है चरन अधारा हे॥६॥

(३)

सतगुरु लगन धरावल, जक्तहुं जानी हो ।
हरि से हूँ है ब्याह, वधू अब रानी हो* ॥ १ ॥
आयल लगन सँदेसवा, रोवहिं सब प्रानी हो ।
छोड़ि है देस हमार, बहुरि नहिं आनी हो ॥ २ ॥
तिरगुन तेल लगाय के, दुलही बनाइल हो ।
सुखमन करहिं बधावर, तो चौक पुराइल हो ॥ ३ ॥
तिरबेनी थल नीर, पवन लेइ जाइल हो ।
कंचन कलस भराय, तो मानिक जगाइल हो ॥ ४ ॥
अजर अमर के माँडो, मोतियन छाइल हो ।
चौमुख दियना बारि, सखी सब गाइल हो ॥ ५ ॥
गावहिं वृज की नारि, तो प्रभुहिं रिझाइल हो ।
कामिनि हृदय हुलास, कंत मन भाइल हो ॥ ६ ॥
पूरब चंद उदय किये, तब भाँवर नाइल हो ।
सेँदुर बंदन चारु†, अभय पद पाइल हो ॥ ७ ॥
जन गुलाल सोहागिनि, कंत बनाइल हो ।
पूरन प्रेम हमार, तो नौबति बजाइल हो ॥ ८ ॥

(४)

मूल कँवल चित लावल, सुरति चढ़ल असमान ।
जगमग जोति जगावल, जम कर मरदल मान ॥ १ ॥

*अभी तक (स्त्री) थी मगर मालिक के साथ ब्याह होने से रानी हो जाऊगी । †सुंदर ।

पाँच पचीस धरि बाँधल, तीन देव निरवारि।
बिगसित कँवल मन भावल, पावल देव मुरारि ॥ २ ॥
तन मन सर्वस वारल, आनँद केलि हुलास।
हरखि हरखि गुन गावल, प्रभु अपनो लियो पास ॥ ३ ॥
सुखमन सेज बिछावल, पूजलि आस हमार।
जन गुलाल पिया बिलसहिं, रोम रोम बलिहार ॥ ४ ॥

(५)

आजु मेरे मंगल अनँद बधावर, आरति करवौं ॥ टेक ॥
सहज कै थार सत्त की बाती, प्रेम के अच्छत भरवौं ॥१॥
सुन्न सिखर पर आरत होवै, तिरबेनी तट बरवौं ॥ २ ॥
गगन मँडल में सखि सब गावहिं, भाँवर दै सुर भरवौं॥३॥
सिव के घरे सक्ति जब आई, गुन औगुन बीचरवौं ॥४॥
ऐसी आरति जो नर गावै, बहुरि न भवजल डरवौं ॥५॥

आरती

(१)

मन में जानिये हो, सत्त सब्द चित लाय।
पूरन आरति करि जेहि आवै, ता के गुरू सहाय ॥ १ ॥
बिन गुरु ध्यान ज्ञान का करिये, अनतहिं जाय बहाय।
सहज समाधि हृदय जिन लायो, जारो विषय बलाय॥२॥
सुन्न सिखर जिन आसन माँड़ो, तिरबेनी तट जाय।
उड़ो हंस गगनी चढ़ि धावो, आनँद जोति जगाय ॥३॥
गावँ न ठावँ न नावँ न देवा, सेवा सत्त लगाय।
पूरन ब्रह्म अमर अविनासी, सहजहिं रहो समाय ॥४॥

अति अथाह थाह नहिँ अविगत, जलहीं जल मीलाय।
कह गुलाल पूरन घर पाये, घटिहै हमरि वलाय ॥ ५ ॥

(२)

गगन को थार वनाय, प्रेम भरि आरति वारी।
चैामुख चमकत जोति, उठत झन झनकारी ॥ १ ॥
मन पवना को फेर, सहज घर लागलि तारी।
उनमुनि लागो वंद, थकित भई नौ दस नारी ॥ २ ॥
पाँच पचीस तिनि* जारि, सहज घर लागलि तारी।
लोक वेद कियो दान, दई तव आरति वारी ॥ ३ ॥
कोटिन चंद उगाय, अमी रस नाना गारी।
गुरुमुख भयो प्रसाद, मनहिं मन आरत प्यारी ॥ ४ ॥
धन सतगुरु वलिहारि, चरन छवि पर जिय वारी।
कह गुलाल वैराह, आरति फूललि फुलवारी ॥ ५ ॥

(३)

सहज घर आरति मौज में लागी ॥ टेक ॥
विनु वाजे वाजा धुनि होवै, विनु चरनन गति साजी॥१॥
गगन मँडल अनहद धुनि वाजै, प्रेम प्रीति हिये जागी॥२॥
ब्रह्मा विस्नु सीव तहँ नाहीं, अलख पुरुष अनुरागी॥३॥
अधर महल में आरति होवै, सेत छत्र छवि साजी॥४॥
कोटिन चंद निछावरि वारौं, आरति भइ वड़ भागी॥५॥
संत साध मिलि आरत होवै, कहि गुलाल वैरागी॥६॥

(४)

आरति नैन पलक पर लागी ॥ टेक ॥
निरझर झरत रहत निसु वासर, सव्द सनेही जागी॥१॥

*तीन

बिनु करताल पखाउज बाजै, बिनु रसना अनुरागी ॥२॥
सुभग सरूप सोहावन सुंदर, सेत धजा सिर साजी॥३॥
सुखमन चॅवर ढुरत निःअंतर, आरत हमरी गाजी॥५॥
कह गुलाल आरति हम पाये, लोक वेद मति त्यागी॥६॥

(५)

आरती मनुवाँ मौज की कीजै, प्रेम निरंतर साहब लीजै॥१॥
पहिली आरति अनुभव आवै, जुग जुग अचल परम पद पावै ॥२॥
दुसरी आरति दुविधा धोवै, सतगुरु सब्द अगम गति जोवै॥३॥
तिसरी आरति त्रिकुटी थाना, मन पवना लै जोति समाना॥४॥
चौथी आरति त्रिभुवन रीझै, सहज सरूप आरती कीजै॥५॥
पँचई आरति पाँचो गावै, गगन मँडल मे मठ गै छावै॥६॥
छठईं आरति छः चक्र बेधावै, उलटि निरंतर सुन्न बसावै७
सतई आरति सहज धुनि गावै, अनहद सुनि धुनि घंट बजावै॥८॥
अठई आरति आपु बनावै, बिगसै कमल अमी तब पावै॥९
नवई आरति नौ द्वार लगावै, जम जीते तब मंगल गावै१०
दसई आरति दसो घर पूरा, जोति मिलो मनुवाँ भयो सूरा॥११॥
एकादस* आरति करन जिन जानी, कहैँ गुलाल सोई ब्रह्म ज्ञानी ॥१२॥

*ग्यारहवीं।

(६)

ऐसी आरति करु मन लाय, महा प्रसाद ठाकुर के चढ़ाय॥१॥
प्रेम के पतरी प्रीति लगाय, भाव के विंजन रुचिर बनाय॥२॥
संत साध मिलि आरत गाय, प्रभु के सिर पर चँवर ढुराय ॥३॥
सुर नर मुनि सब आस लगाय, गिरा परा किनका बिन* खाय ॥४॥
सिव ब्रह्मा जाको खोजत धाय, प्रभु को जूँठन भागहुं पाय॥५॥
सतगुरु बुल्ला† अलख लखाय, संतन सीत गुलालहुं पाय ॥६॥

(७)

अरति मनुवाँ करु बनवारी,
सदा सुफल हरि नाम उचारी ॥१॥
सतगुरु सब्द अगम जो पावे,
निसु दिन नौबत डंक बजावै ॥२॥
गरजे गगना मनुवाँ हरखे,
चौमुख मानिक मोती बरखे ॥३॥
आरति एक अनंदपुर वारी,
सहजहिं सुखमन लागी तारी ॥४॥
ऐसी आरति जिन नर गाया,
ता के निकट न आवे माया ॥ ५ ॥

(८)

हरि हरि राम नाम लीजै ।
निसु दिन अनहद नौबति दीजै‡ ॥१॥

*चुनकर । †बुल्ला साहब गुलाल साहब के गुरु का नाम है । ‡बजाइये ।

चौमुख दियना वारि कै मन संपुट कीजै* ।
बिगसि कमल गगना चढ़ो तन को दान दीजै ॥२॥
अगम जोति झरत मोति मुक्ता मनि सीजै ।
प्रेम नेम अमी रस आरती भनीजै† ॥ ३ ॥
अति अभेव अलख देव सेव साँच कीजै ।
आरति आनंद कंद जन गुलाल जीजै ॥ ४ ॥

(९)

हिंदू हृदय जो आरति पावे, राम नाम के मसल‡ चलावे ॥१॥
गगन मँडल मे आरति वारे, तब हीं जीव निछावरि डारे ॥२
सुन्न को थार सत्त की बाती, सुरति निरति बारै दिन राती ३
सुखमन भाँवरि दै दै गावे, ब्रह्मा बिस्नु सिव संग न भावे४
अचल अमूरति आरति तारी, थकित भयो घर नौ दस नारी ॥ ५ ॥
रोम रोम आरति बलिहारी, सकल मनोरथ आरती उतारी६
अजर आस आरति धरि जोरा, आरति सत्त थकित मन मोरा ॥ ७ ॥
तन मन धन न्योछावरि वारी, माया मोह त्याग सब झारी८
आरत सहजहिं सुमिरन करई, आरति चरन सरन तर परई९
आरति प्रेम नेम जब होई, भला बुरा नहिं बूझै कोई ॥१०॥
आरति फिरि जब निरति समाई, मुक्ता अच्छर सिदिक§ बनाई ॥ ११ ॥
आरति जब घर बरलि बनाई, रोम रोम पद आरति पाई१२
कह गुलाल हम आरति पाई, जन्म जन्म के संस मिटाई१३

*मन को सब ओर से बटोर लो । †कहो, गावो । ‡चरचा । §सत्य ।

(१०)

मुसलमान जो आरति करई, सिदिक सबूरी हर दम धरई१
बेमहाल ध्यारति नहिं करई, फजिर वारि आरति जो धरई२
आरति इस्क इमाने धरई, अल्लह अगुने बानी फरई* ॥३॥
आरति बैत आप जो होई, दुरमति छोड़ि असल चित जोई४
आरति मुसहफ प्रीति परोये, जुलमहिं मारि हक्क तब जोये५
आरति किसमत करम जब आई, मजहब पाय तब आरति गाई ॥ ६ ॥
मन मिरदग आरती गावे, जुलुम जबर काहू न सतावे ॥७॥
आरति बुंद अकिन जब बारा, सुरति विसुरति गयो सब भारा ॥ ८ ॥
आरतिपुर अमले जिन पाई, कह गुलाल सो है गुर-भाई ९

(११)

राम राम राम राम आरती हमारी, दुनिया है सब देवान देव पूजै भारी ॥ टेक ॥
सतगुरु जब दियो करार, स्त्रवन सुन्यो दै विचार ।
याही सिदिक जिव हमार, नेम बरत धारी ॥ १ ॥
जोग जुगत मन हमार, ताप रहै पवन भार ।
काया थार जोति भरि कै, त्रिकुटी ले वारी ॥ २ ॥
उनमुनी घन गरजि जोर, सुखमन कै करि झकोर ।
बंक नाल मेरु डंड, अलख पुरुष भारी ॥ ३ ॥
सेस फनि मनी अनंद, प्रान प्रभु की करत कंद ।
जीतो जोग रोग सोग, करम भरम डारी ॥ ४ ॥

*मालिक के निर्गुन नाम की धुन गाजने लगी। [कुरान]।

अति अथाह नाहिं थाह, परस भयो गुरु कि बाँह* ।
नाहि आदि अंत मद्ध, एक ही निहारी ॥ ५ ॥
कह गुलाल सुनो यार, आरति पूरन हमार ।
राज करौं दसौ दिसा, छत्तर सिर धारी ॥ ६ ॥

(१२)

मन माना मैं मनहिं जान, आरत सो ज्ञानी ॥ टेक ॥
द्वादस में सुरति तान, उठत तत्त बानी ॥ १ ॥
गल गल जीव ब्रह्म मिलो, अलख पुरुष भारी ॥ २ ॥
वेद भेद सब खुवार, पत्थल जल मानी ॥ ३ ॥
राम नाम हेतु नाहिं, पसु समान जानी ॥ ४ ॥
आपु अपने चिन्हत नाहिं, फिरत भुलानी ॥ ५ ॥
कह गुलाल सत फकीर, दुनिया बैरानी ॥ ६ ॥

(१३)

लागत मोहिं पियारा, आरति लागत मोहि पियारा ॥टेक॥
सुखमन के घर आरति माँड़ो, रवि ससि दूनौं बारा ॥१॥
तिरबेनी तिर आरति बारल, भाँवरि देत उतारा ॥२॥
गगन मँडल मे आरति गावल, मुक्ता भरि भरि थारा ॥३॥
दसौ दिसा में आरति पूरन, धन सतगुरु बलिहारा ॥४॥
सिव सक्ती जब गाँठि परो है, देखल आपु विचारा ॥५॥
कह गुलाल आरति हम पावल, फगुआ फरल लिलारा॥६॥

*दखल ।

॥ पहाड़ा ॥

एका एक अमल जो पावे, साँचा सतगुरु भावे।
प्रेम पदारथ हिय में राखे, सुमिरत हीं सुख पावे ॥१॥
दुआ दोष जो दुरमति छोड़े, तिरगुन ताप बहावे।
सुरति निरति लै आसन माँड़े, सकल सँतोष जो आवे॥२॥
तिया तिरकुटी जो मन राखे, झिलिमिलि जोति जगावे।
उनमुनि लागो बंद सहज धुनि, चंद मँडल घर छावे ॥३॥
चौथे पद पर पग जो नावे, अनुभौ डंक बजावे।
गगन मँडल में बाजी माँड़ो, बंक नाल चलि जावे ॥४॥
पँचएँ परम तत्त जो जानो, सुनि भगवत मन लावे।
पाँच पचीस तीनि बसि करि के, सेत छत्र सिर छावे॥५॥
छटएँ छिमा सील जो उपजे, सत्त सँतोस चढ़ावे।
नौ दर छोड़ि दसौ दिसि धावे, सहज समाधि जो पावे ॥६॥
सतएँ सदा सरन मन राखे, सब्द कै भेष बनावे।
कोटि चंद न्योछावरि वारे, मानिक जोति जगावे ॥७॥
अठएँ अगम जोति जो बारे, दरस परस चित लावे।
सोहं सब्द सुरत* निस बासर, अनतहिं कतहुं न जावे ॥८॥
नौवेँ नाम निरंजन नौका, कनहरि† गुनहिं चलावे।
साँचै गहे झूठ नहिं आवे, भवसागर तरि जावे ॥९॥
दसएँ द्वार कि ताली खोलै, अविगत्ति गतिहिँ समावे।
सकल कामना मन हूँ पूरन, मन कै मौज मिलावे ॥१०॥
एकादस नाम जो पूरन पावे, अगम निगम नहिं आवे।
कह गुलाल तब सतगुरु चीन्हे, घरहीं में घर छावे ॥११॥

*ध्यान। †खिवट।

॥ मिश्रत ॥

॥ शब्द १ ॥

मोहिं नाथ मिलावहु कौने गुना,
प्रभु करि लीजै अपनो जना ॥ टेक ॥
दुख सुख संपति जीव को लागी,
अंत काल वसि सात जना ॥१॥
यह मन चंचल चोर अन्याई,
भक्ति न आवत एक किना* ॥२॥
कृपा कियो प्रभु दृष्टि निहास्यो,
सब थकि लागि रहल कोना† ॥३॥
अमर मोर पिय उपजे न विनसे,
पुलकि पुलकि मिलि कै गवना ॥४॥
कह गुलाल हम भये सोहागिनि,
अब नहिं अवना नहिं जवना ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

सब्द सनेह लगावल हो, पावल गुरु रीती ।
पुलकि पुलकि मन भावल हो, ढहली‡ भ्रम भीती§ ॥१॥
सतगुरु कृपा अगम भयो हो, हिरदय विसराम ।
अब हम सब विसरावल हो, निस्चय मन राम ॥२॥
छूटत जग व्योहरवा हो, छूटल सब ठाँव ।
फिरब चलब सब थाकल हो, एको नाहिं गाँव ॥३॥

*किनका । †किनारे । ‡गिरी । §दीवार ।

कह गुलाल सतगुरु वलिहारी ।
मिलि हौं प्रान पियार हो सजनी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

ऐसन अचरज देखहु जाई ।
जुग जुग दुबिधा पंथ चलाई ॥ १ ॥
अपनहिं काया गोपि लुटाई, पारथ बीर न धनुप चढ़ाई* २
घर घर नारि पुरुप संग होई, एकै ठाकुर अवर न कोई ३
यह जग मिथ्या फिरत बनाई, चढ़त चरख फेरत दिन जाई ४
कहिं राजा कहि दुख सुख-दाई, अपनहिं गोपी कान्ह कहाई ॥ ५ ॥
आतम राम सकल जग छाई, धधा धोख भरत बौराई ॥६॥
कह गुलाल अब राम दोहाई, हम बचली सतन सरनाई ॥७॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रभु की सोभा बनी है रसाल ।
धन्न सो घरी धन्न वह पल है,
जा सिर उगो है भाल ॥ १ ॥
आठ पहर सनमुख हीं निरखो,
अनुभो अविगत लाल ।
जासु दरस सुर नर मुनि ध्यावहिं,
खोजत फिरत बेहाल ॥ २ ॥

*पारथ अर्युन का नाम है। जब अर्युन श्री कृष्ण के गुप्त होने पर उन के रनवास को पहुचाने गोकुल को चले तो रास्ते में काबा लोगों ने घेरा–अर्युन ने उनको बान से मार कर भगाना चाहा पर कितना ही धनुप को चढ़ाया वह न चढ़ी और काबा लोगों ने ऐसे बीर के आछत उन को लूट लिया।

बनी बनी कौतुक बनि आवे,
अनत कला सो ख्याल ।
लोभी लंपट हीन करम बसि,
ता को भयो है दयाल ॥ ३ ॥
का बरनौं छवि बरनि न आवे,
अल्प बुद्धि सठ* बाल ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम,
लियो अपनाय गुलाल ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

साँचा है साँचा हरिनाम, सत रटत हैं आठौ जाम ॥१॥
सनकादिकन्ह लियो सुकदेव, नारद कीन्हो सतन सेव ॥२
अंबरीक लियो जनक बिदेह, लियो जोगेसरन्ह माया खेह३
ध्रू प्रहलाद भरि लियो करार, लियो है कूबरी कंचन थार४
लियो हनुमान लियो सुग्रीम, लियो बिभीषन पंडो भीम५
नामदेव भरि लियो कबीर, लियो मलूका नानक धीर ६
रैदास लियो है मीराबाई, नरसी जन लियो खेल कन्हाई ७
यारीदास लियो गुरु संग पाय, केसो बुल्ला दूनो भाय॥८॥
सतगुरु बुल्ला सहज लखाय, कह गुलाल सब चरन समाये ९

॥ शब्द ८ ॥

हरि चेतहु रे नर जन्म बाद†, डहकत फिरत कहा माया बाद‡ ॥ १ ॥
नर भूले करि पुन्न पाप, जन्म जन्म होवे संताप ॥२॥

*मूरख, दुष्ट । †निस्फल । ‡झगड़ा ।

कह गुलाल सतगुरु बलिहारी ।
मिलि हौं प्रान पियार हो सजनी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

ऐसन अचरज देखहु जाई ।
जुग जुग दुविधा पंथ चलाई ॥ १ ॥
अपनहिं काया गोपि लुटाई, पारथ बीर न धनुप चढ़ाई ॥ २ ॥
घर घर नारि पुरुष सँग होई, एकै ठाकुर अवर न कोई ॥ ३ ॥
यह जग मिथ्या फिरत बनाई, चढ़त चरख फेरत दिन जाई ॥ ४ ॥
कहिं राजा कहि दुख सुख-दाई, अपनहिं गोपी कान्ह कहाई ॥ ५ ॥
आतम राम सकल जग छाई, धधा धोख मरत बौराई ॥ ६ ॥
कह गुलाल अब राम दोहाई, हम बचली संतन सरनाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रभु की सोभा बनी है रसाल ।
धन्न सो घरी धन्न वह पल है,
जा सिर उगो है भाल ॥ १ ॥
आठ पहर सनमुख हीं निरखो,
अनुभौ अविगत लाल ।
जासु दरस सुर नर मुनि ध्यावहिं,
खोजत फिरत बेहाल ॥ २ ॥

*पारथ अर्जुन का नाम है । जब अर्जुन श्री कृष्ण के गुप्त होने पर उन के रनवास को पहुचाने गोकुल को चले तो रास्ते में काबा लोगों ने घेरा–अर्जुन ने उनको बान से मार कर भगाना चाहा पर कितना ही धनुप को चढ़ाया वह न चढ़ी और काबा लोगों ने ऐसे बीर के आछत धन को लूट लिया ।

बनी बनी कौतुक बनि आवे,
अनत कला सो ख्याल ।
लोभी लंपट हीन करम बसि,
ता को भयो है दयाल ॥ ३ ॥
का बरनौं छवि बरनि न आवे,
अल्प बुद्धि सठ* बाल ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम,
लियो अपनाय गुलाल ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

साँचा है साँचा हरिनाम, सत रटत है आठौ जाम ॥१॥
सनकादिकन्ह लियो सुकदेव, नारद कीन्हो सतन सेव ॥२
अंबरीक लियो जनक बिदेह, लियो जोगेसरन्ह माया खेह३
ध्रू प्रहलाद भरि लियो करार, लियो है कूबरी कंचन थार४
लियो हनुमान लियो सुग्रीम, लियो बिभीषन पंडो भीम५
नामदेव भरि लियो कबीर, लियो मलूका नानक धीर ६
रैदास लियो है मीराबाई, नरसी जन लियो खेल कन्हाई ७
यारीदास लियो गुरु सँग पाय, केसो बुल्ला दूनो भाय॥८॥
सतगुरु बुल्ला सहज लखाय, कह गुलाल सब चरन समाये९

॥ शब्द ८ ॥

हरि चेतहु रे नर जन्म बाद†, डहकत फिरत कहा माया बाद‡ ॥ १ ॥
नर भूले करि पुन्न पाप, जन्म जन्म होवै संताप ॥२॥

*मूरख, दुष्ट । †निस्फल । ‡झगड़ा ।

॥ शब्द १३ ॥

संतो फिर जिवना नहिं हौंदा* ।
का तैं भरमि भरमि गति खौंदा† ॥ १ ॥
माटी को तन माटिहिं मिलि है, पवनहिं पवन समौंदा‡ ।
सकल पदारथ छोड़ि नाम धन, झूठ फँसा री फौंदा§ ॥२॥
संत साध कै रीति न जानहि, मुवल अरु जिंदा गंदा ।
हरि मद माते मस्त दिवाने, प्रेम पियाला पिंदा‖ ॥३॥
दोजखभिस्त भिस्त नहिं दोजख, जिकिर¶ मुहाला** किंदा।
कह गुलाल अनुभौ जिन गायो, सोई मुसलम जिंदा ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

संतो जोगी एक अकेला ।
तातैं मरन जिवन नहिं खेला ॥ १ ॥
सत्त सबूरी सहज को कंथा†† सेल्ही सुभग सहेला ।
माति माति मगन घर फेरो, बहुरि न मनुवाँ दुहेला‡‡॥२॥
पाँचहु का परपच मिटावो, मन पवना सँग रेला§§ ।
सुरति निरति ले आसन माँडो, तहाँ गुरू नहिं चेला ॥३॥
आठ पहर इक नाम उठतु है, ज्ञान ध्यान को मेला ।
कहै गुलाल अगमपुर वासी, संत चरन मन देला ॥४॥

*होगा । †खोताहै । ‡समाय जायगा । §फंदा । ‖पीते हैं । ¶सुमिरनी । **मुश्किल । ††कथरी, गुदरी । ‡‡मन को मस्त और मगन रख कर त्रकुटी की ओर उलटो तो फिर कुछ कठिनाई न रहेगी । §§मिल कर चलना ।

॥ शब्द १५ ॥

मन चित धरु रे, परम तत्त में रहु रे ॥ टेक ॥
ढंडस* करु मन तेँ दूर, सिर पर साहब सदा हजूर ॥१॥
रोम रोम जाके पद परगास, संत सभा में पावे बास ॥२॥
सत संतोष हृदय करु ज्ञान, काटि कर्म मिटि आवा जान ३
छोड़ि चंचलता होवहु सूर, निसु दिन झरत वदन† पर नूर ॥ ४ ॥
कह गुलाल मेरो नाम अधार, जम जीतल दुख गइल हमार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

जो चित लागै राम नाम अस ॥ टेक ॥
तृषावंत जल पियत अनँद अति ।
थकलहि गाँव‡ मिलत है जौन जस ॥ १ ॥
निर्धन धन सुत बाँझ बसत चित ।
संपति बढत न घटत जौन अस ॥ २ ॥
करत है कपट साँच करि मानत ।
मगन होत नर मूढ सकल पसु ॥ ३ ॥
प्रेम गलित चित सहज सील अति ।
सर्व भूत पर करत दया रस ॥ ४ ॥
आनँद उदित अगम गति ज्ञानी ।
त्रिलोक नाथ पति काहे न होइ बस ॥ ५ ॥
सतगुरु प्रीति परम तत सत मत ।
विमल विमल बानी मे रहत लस ॥ ६ ॥

*झगल, अकड़ । †चिहरा । ‡ठिकाना ।

अछय अमर आनद है, ज्ञान उदित आलेख ।
सर्व भूत में पूरि रह्यो है, सो प्रभु छिन छिन देख॥३॥
निस दिन नौबति बाजही, निझर झरे तहँ नूर ।
उमँगि उमँगि तहँ गावहीं, कोउ बैठे साधू सूर ॥४॥
कह गुलाल सो पावई, सतगुरु की परतीत ।
तब जिय निस्चय आवई, सबहिं भये तब मीत ॥५॥



॥ चुने हुए दोहे ॥

सत्त सब्द गुन गायऊ, संतन प्रान अधार ।
अगम अगोचर दूरि है, कोऊ न पावत पार ॥१॥
उठ तरंग दसहूं दिसा, भाँति भाँति के राग ।
बिन पग नाच नचायऊ, बिनु रसना गुन गाय ॥२॥
ज्ञान ध्यान तहवाँ नहीं, सहज सरूप अपार ।
जन गुलाल दिल सों मिलो, सोई कंत हमार ॥३॥
बिन जल कँवला बिगसेऊ, बिना भँवर गुंजार ।
नाभि कँवल जोती बरै, तिरबेनी उँजियार ॥४॥
सुखमन सेज बिछायऊ, पवढहिं प्रभू हमार ।
सुरति निरति ले जायऊ, दसो दिसा के द्वार ॥५॥
पुलकि पुलकि मन लायऊ, आवा गवन निवार ।
जन गुलाल तहँ भायऊ, जम का करिहै हमार ॥६॥
मन पवनहिं जीतो जबै, महसुन* माहि समाध ।
सुखमन जोति सँवारेऊ, बरि बरि होत प्रकास ॥७॥
ओअंकार समाइलो, जोति सरूपी नाम ।
सेत सुहावन जगमगर, जीव मिलल सतनाम ॥८॥
जिन यह ब्रह्म बिचारल, सोई गुरू हमार ।
जन गुलाल सत्त बोलही, झूठ फिरहि संसार ॥९॥
दृष्टि पदारथ फरल सोइ, सहज कै परलि धमार ।
अति अदभुत तहँ देखल हो, पुलकि पुलकि बलिहार ॥१०॥
बरनत बरनि न आवई, कोटि चंद छबि वार ।
दसव दिसा पूरब सोई, सत सदा रखवार ॥११॥

*महासुन्न ।

जिन पावल तिन गावल, अवर सकल स्रम डार।
कहै गुलाल मनोरवा*, पूरन आस हमार ॥१२॥
प्रेम कै परउ हिंडोलवा, मानिक बरल लिलार।
कहैं गुलाल मनोरवा, पुजवल आस हमार ॥१३॥
अनुभौ फाग मनोरवा, दहुँ दिसि परलि धमार।
काया नगर में रँग रचो, प्रान नाथ बलिहार ॥१४॥
बिनु बाजे धुनि गाजई, अधरहिं अगम अपार।
प्रान तवहिं उठि गवनेऊ, बहुरि नाहिं औतार ॥१५॥
प्रेम पगल मन रातल, आनँद मंगलचार।
तीन लोक के ऊपरे, मिललहिं कंत हमार ॥१६॥
जोग जग्य जप तप नहीं, दुख सुख नहिं संताप।
घटत बढ़त नहिं छीजई, तहवाँ पुन्न न पाप ॥१७॥
संत सभा में बैठ कै, आनँद उजल प्रकास।
जन गुलाल पिय बिलसही†, पूजलि मन कै आस ॥१८॥
बंक नाल चढ़ि के गयो, आयो प्रभु दरबार।
जगमग जोति जगन लगी, कोटि चंद छवि वार ॥१९॥
मुक्ता झरि बरषन लगो, दसो दिसा झनकार।
जन गुलाल तन मन दियो, पूरी खेप हमार ॥२०॥
मानिक भवन उदित तहाँ, भाँवर दै दै गाय।
जन गुलाल हरखित भयो, कौतुक कह्यो न जाय ॥२१॥

*फाग के एक राग का नाम। †विलास करता है।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ सतबानी के उन को मिलैं उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करैं।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत खर्च होता है तौ भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सबसक्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकैं आगे छपैंगी बिना माँगे भेज दी जायंगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परन्तु डाक महसूल उन के जिम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकैं अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन, लिया जायगा।

अब मीरा बाई के भजन और दरिया साहब बिहार के महात्मा का दरियासागर ग्रंथ जो अब तक दूसरी प्रति लेख की न मिलने के कारन रुका हुआ था हाथ में लिये गये हैं।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाखाना,

जून, १९१० ई०

इलाहाबाद।

जिन पावल तिन गावल, अवर सकल भ्रम डार।
कहै गुलाल मनोरवा*, पूरन आस हमार ॥१२॥
प्रेम कै परल हिंडोलवा, मानिक बरल लिलार।
कहै गुलाल मनोरवा, पुजवल आस हमार ॥१३॥
अनुभौ फाग मनोरवा, दहुँ दिसि परलि धमार।
काया नगर में रँग रचो, प्रान नाथ बलिहार ॥१४॥
बिनु बाजे धुनि गाजई, अधरहिं अगम अपार।
प्रान तबहिं उठि गवनेऊ, बहुरि नाहिं औतार ॥१५॥
प्रेम पगल मन रातल, आनँद मंगलचार।
तीन लोक के ऊपरे, मिललहिं कंत हमार ॥१६॥
जोग जग्य जप तप नहीं, दुख सुख नहिं संताप।
घटत बढ़त नहिं छीजई, तहवाँ पुन्न न पाप ॥१७॥
संत सभा में बैठ कै, आनँद उजल प्रकास।
जन गुलाल पिय बिलसही†, पूजलि मन कै आस ॥१८॥
बंक नाल चढ़ि के गयो, आयो प्रभु दरबार।
जगमग जोति जगन लगी, कोटि चंद छबि वार ॥१९॥
मुक्ता झरि बरषन लगो, दसो दिसा झनकार।
जन गुलाल तन मन दियो, पूरी खेप हमार ॥२०॥
मानिक भवन उदित तहाँ, भाँवर दै दै गाय।
जन गुलाल हरखित भयो, कौतुक कह्यो न जाय ॥२१॥

*फाग के एक राग का नाम। †बिलास करता है।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें और जो दुर्लभ ग्रंथ सतबानी के उन को मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तो भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सबसक्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर दें जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकें आगे छपेंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परन्तु डाक महसूल उन के जिम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

संतबानी पुस्तक-माला

तुलसी साहब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र

,, ,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र

ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र

कबीर साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ दूसरा एडिशन

,, , शब्दावली भाग २

,, ,, अखरावती

पलटू साहब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १

,, ,, शब्दावली, भाग २

धरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १

,, ,, भाग २

रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र

जगजीवन साहब की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १

दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र, दूसरा एडिशन

भीखा साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र

गुलाल साहब (भीखा साहब के गुरू) की बानी

सहजो बाई की बानी और जीवन-चरित्र

दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र

गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी

अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र भी अँग्रेजी पद्य मे छपा है (यह रमनीय पुस्तक एक मेम ने लिखी है संतबानी पुस्तक-माला की नहीं है)

मूल्य मे डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है ।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,

इलाहाबाद ।